तापमान
अधिकतम 33.7°C
न्यूनतम 14.6°C

हरिभूमि
सोनीपत भूमि

रोहतक, रविवार 25 अक्टूबर 2026

11 शंभू दयाल मॉडर्न स्कूल में मातृ-पितृ पूजन कार्यक्रम



12 गांव धनाना की बेटी नेहा ढुल बनीं लेफ्टिनेंट



खबर संक्षेप

बाइक का संतुलन बिगड़ा गिरकर घायल हुआ चालक बाद में वाहन मिला गायब

खरखौदा। झरोठ पुल के पास सड़क पर पड़े पत्थर के कारण बाइक का संतुलन बिगड़ने से चालक गिरकर घायल हो गया। उपचार के बाद जब वह घटनास्थल पर पहुंचा तो उसकी बाइक गायब मिली। पीड़ित की शिकायत पर खरखौदा थाना पुलिस ने बाइक चोरी का मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। सोनीपत के मयूर विहार निवासी सुनील कुमार ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि 20 अक्टूबर को वह अपनी अपाचे बाइक पर खरखौदा से सोनीपत की तरफ जा रहा था। झरोठ पुल के पास सड़क पर पत्थर पड़ा होने के कारण उसकी बाइक का संतुलन बिगड़ गया और वह गिरकर घायल हो गया। बेहोशी की हालत में होने के कारण उसे पता नहीं चला कि उपचार के लिए उसे कौन अस्पताल लेकर गया।

इलाज के बाद जब वह घटनास्थल पर पहुंचा तो उसकी बाइक वहां नहीं मिली।

पिता पर दुष्कर्म का आरोप, केस दर्ज

गन्नौर। बड़ी थाना क्षेत्र में एक युवती ने अपने पिता पर दुष्कर्म करने और विरोध करने पर जान से मारने की धमकी देने का आरोप लगाया है। पुलिस ने शिकायत के आधार पर आरोपित के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। शिकायत में युवती ने आरोप लगाया कि 23 अक्टूबर को उसके पिता ने पहले उसकी मां के साथ मारपीट की और उसे घर से निकाल दिया। इसके बाद आरोपित ने उसके साथ जबरदस्ती की। युवती के अनुसार, विरोध करने पर उसके पिता ने उसके भाई को खेत में भेज दिया और उसके साथ दुष्कर्म किया। उसने आरोप लगाया कि शोर मचाने पर पिता ने उसे जान से मारने की धमकी दी। युवती ने यह भी आरोप लगाया कि उसके पिता उसके साथ कई बार गलत काम कर चुके हैं और अक्सर उसकी मां के साथ मारपीट करते हैं। पुलिस ने शिकायत के आधार पर आरोपित पिता के खिलाफ दुष्कर्म, मारपीट और जान से मारने की धमकी देने के आरोप में मामला दर्ज किया है। मामले की जांच महिला उपनिरीक्षक शर्मीला कर रही हैं।

जसपाल सिंह ने संभाला एसीपी गन्नौर का पदभार

गन्नौर। एचपीएस जसपाल सिंह ने एसीपी गन्नौर के रूप में पदभार ग्रहण कर लिया है। यह पद काफी समय से रिक्त था। इस दौरान एसीपी ट्रैफिक नरेश अहलावत के पास एसीपी गन्नौर का अतिरिक्त कार्यभार था। जसपाल सिंह की नियुक्ति के बाद अब उन्हें गन्नौर में एसीपी की जिम्मेदारी सौंप दी गई है। जसपाल सिंह इससे पहले गन्नौर थाना प्रभारी के रूप में भी सेवाएं दे चुके हैं। ऐसे में वह क्षेत्र की परिस्थितियों और स्थानीय पुलिस व्यवस्था से पहले से परिचित हैं। उनके पदभार संभालने से गन्नौर में एसीपी का रिक्त पद भर गया है।

त्योहारी सीजन में परेशानी : बाजारों में वाहन खड़े करने की जगह नहीं

छह जगह पार्किंग की योजना डेढ़ माह से फाइलों में अटकी, जाम से जूझ रहा शहर

- सितंबर में खाली जमीनों का ब्योरा मांगने के बाद भी निगम नहीं कर पाया व्यवस्था
- कच्चे क्वार्टर, रेलवे रोड, बस अड्डा रोड और मामा-भांजा चौक पर बढ़ी परेशानी
- सड़कों व फुटपाथ पर खड़े हो रहे वाहन, लग रहा जाम

हरिभूमि न्यूज ⏭ सोनीपत

त्योहारी सीजन में खरीदारी के लिए बाजारों में उमड़ रही भीड़ के बीच सोनीपत में पार्किंग की अव्यवस्था लोगों की परेशानी बढ़ा रही है। प्रमुख बाजारों और मार्गों पर वाहन खड़े करने की उचित व्यवस्था नहीं होने से दिनभर रुक-रुककर जाम लग रहा है। हालात यह हैं कि कई जगह लोगों को पैदल निकलने तक में परेशानी हो रही है। दूसरी ओर, नगर निगम की ओर से शहर में छह स्थानों पर पार्किंग व्यवस्था बनाने की योजना डेढ़ माह बाद भी सिरे नहीं चढ़ पाई है। निगम ने सितंबर की शुरुआत में खाली जमीनों का ब्योरा जुटाने और संबंधित विभागों से अनुमति लेने की प्रक्रिया शुरू की थी, लेकिन त्योहारी सीजन में भी लोगों को राहत नहीं मिल पाई है। सामान्य दिनों में भी पार्किंग की कमी से जूझने वाले बाजारों में त्योहार के चलते भीड़ बढ़ने से हालात और बिगड़ गए हैं। दुकानों के बाहर और सड़कों के किनारे खड़े वाहनों के कारण मार्गों की चौड़ाई कम हो जाती है। इससे वाहन चालकों के साथ राहगीरों को भी परेशानी झेलनी पड़ रही है। कच्चे क्वार्टर, रेलवे रोड, बस अड्डा रोड, मुरथल अड्डा रोड और मामा-भांजा चौक सहित कई प्रमुख स्थानों पर जाम की स्थिति बन रही है।



सोनीपत। मामा-भांजा चौक व बस अड्डा रोड पर लगा जाम।

इन मार्गों पर नो पार्किंग जोन निर्धारित

शहर में नगर निगम कार्यालय से सुभाष चौक तक, रेलवे रोड स्थित लोक निर्माण विभाग कार्यालय से गीता भवन चौक तक, गीता भवन चौक से मामा-भांजा चौक तक, सुभाष चौक से एटलस फैक्टरी तक दोनों ओर, सेक्टर-14 पुलिस चौकी से मीनाक्षी गार्डन तक, गोहाना रोड फ्लाईओवर से ककरोई चौक तक, सुभाष चौक से बटन फैक्टरी चौक तक और मिशन चौक से शहरी पुलिस थाना तक नो पार्किंग जोन निर्धारित हैं। इसके बावजूद बाजारों और प्रमुख मार्गों पर वाहनों की आवाजाही तथा पार्किंग को लेकर परेशानी बनी हुई है।

दुकानदारों का कारोबार भी हो रहा प्रभावित



शहर के व्यापारियों और दुकानदारों का कहना है कि त्योहारों के दौरान बाजारों में ग्राहकों की संख्या बढ़ जाती है। ऐसे में पार्किंग की उचित व्यवस्था नहीं होने और अतिक्रमण के कारण ग्राहकों को बाजारों तक पहुंचने में परेशानी होती है। सड़कों पर वाहन खड़े होने से यातायात प्रभावित होता है और वाहन चालकों तथा पुलिसकर्मियों के बीच भी अक्सर कहासुनी की स्थिति बन जाती है। दुकानदारों का कहना है कि वे लंबे समय से पार्किंग की व्यवस्था करने की मांग उठा रहे हैं, लेकिन समस्या का स्थायी समाधान नहीं हो पाया है।

धरातल पर नहीं उतरी योजना, परेशानी

नगर निगम ने त्योहारी सीजन को देखते हुए सितंबर के शुरुआती दिनों में शहर में छह स्थानों पर पार्किंग व्यवस्था बनाने की योजना तैयार की थी। इसके तहत विवेकानंद चौक, जिंदल विश्वविद्यालय के आसपास, कच्चे क्वार्टर मार्केट, कपड़ा मार्केट, रेलवे रोड तथा निदान और फिम्स अस्पताल के पास खाली जमीनों पर पार्किंग की संभावनाएं तलाशी गई थीं। बस अड्डे के आसपास भी जमीन तलाशने की बात कही गई थी। योजना को आगे बढ़ाने के लिए निगम ने जिंदल विश्वविद्यालय और फिम्स अस्पताल के आसपास जमीन की स्थिति जानने के लिए पटवारी से रिपोर्ट मांगी थी। वहीं, विवेकानंद चौक के पास हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण (एचएसवीपी) की खाली जमीन पर पार्किंग बनाने के संबंध में विभाग से पत्राचार किया गया था। हालांकि, डेढ़ माह बीतने के बाद भी इन प्रयासों का असर जमीन पर नजर नहीं आ रहा है। ऐसे में त्योहारी सीजन में पार्किंग की समस्या जस की तस बनी हुई है।

जल्द पार्किंग व्यवस्था करवाने का प्रयास: मेयर

नगर निगम मेयर राजीव जैन ने कहा कि शहर में पार्किंग व्यवस्था बनाने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। कुछ स्थानों का चयन किया गया है और संबंधित विभागों तथा पटवारियों से जमीन की रिपोर्ट मांगी गई है। कच्चे क्वार्टर स्थित ईएसआई अस्पताल की जमीन पर पार्किंग बनाने के लिए मुख्यमंत्री से मांग की जाएगी। उन्होंने कहा कि सुभाष चौक के पास नगर निगम की जमीन पर भी पार्किंग व्यवस्था करवाई जा रही है।

वाहन ने बाइक को टक्कर मारी युवक की मौत, दूसरा गंभीर

हरिभूमि न्यूज ⏭ सोनीपत

जाहरी रोड आरओबी पर शुक्रवार देर रात बाइक सवार दो युवकों को अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। हादसे में एक युवक की मौत हो गई, जबकि दूसरा युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। सूचना मिलने के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने शव कब्जे में लिया और घायल को जिला अस्पताल में पहुंचाया। प्राथमिकी उपचार के बाद चिकित्सक ने घायल को पीजीआई रोहतक रेफर कर दिया। सदरथाने के जांच अधिकारी विनीत हुड्डा ने बताया कि पानीपत के न्यू मॉडल टाउन निवासी मयंक (26) अपने साथी राहुल के साथ बाइक पर सवार होकर मुरथल आए थे। उसके बाद वह दोनों सोनीपत पहुंचे। शुक्रवार देर रात वह जाहरी रोड आरओबी से गुजर रहे थे, तभी उनकी बाइक को अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। हादसे में मयंक की मौत हो गई, जबकि घायल राहुल को अस्पताल में पहुंचाया। चिकित्सक ने प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें पीजीआई रोहतक रेफर कर दिया। पुलिस ने अज्ञात वाहन चालक के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

फैक्ट्री से बाइक पर लौट रहे युवक को ईको ने टक्कर मारी, मौत

गन्नौर। शहर के गढ़ी कला फ्लाईओवर पर हुए सड़क हादसे में बाइक सवार युवक अमित की मौत हो गई। पुलिस ने शिकायत के आधार पर इको चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस को दी शिकायत में मोहनलाल निवासी भोड़वाल माजरी, जिला पानीपत ने बताया कि वह समालखा से गन्नौर के बीच ई-रिक्शा चलाता है। उसका भतीजा अमित गन्नौर की एक फैक्ट्री में काम करता था और आने-जाने के लिए बाइक का इस्तेमाल करता था। मोहनलाल के अनुसार 20 अक्टूबर को अमित फैक्ट्री से बाइक पर घर लौट रहा था। जब वह गढ़ी कला फ्लाईओवर पर चढ़ने लगा, तभी पीछे से तेज गति और लापरवाही से आ रही इको गाड़ी ने उसकी बाइक को टक्कर मार दी। हादसे के बाद इको चालक वाहन छोड़कर मौके से फरार हो गया। मोहन लाल ने घायल अमित को अपनी ई-रिक्शा से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गन्नौर पहुंचाया। चिकित्सकों ने उसे पीजीआई रोहतक रेफर कर दिया। बाद में परिजन उसे पानीपत के एएनटीसी अस्पताल ले गए, जहां उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई।

मिशन वात्सल्य योजना की उपायुक्त ने की समीक्षा

सोनीपत। महिला एवं बाल विकास विभाग, हरियाणा के अंतर्गत मिशन वात्सल्य योजना के माध्यम से देखभाल एवं संरक्षण की आवश्यकता वाले पात्र बच्चों को पालक देखभाल की सुविधा उपलब्ध करवाने का प्रावधान है। इस पहल का उद्देश्य ऐसे बच्चों को निर्धारित प्रक्रिया के तहत सुरक्षित और स्नेहपूर्ण पारिवारिक वातावरण उपलब्ध करवाना है, ताकि वह परिवार जैसा अपनापन पाकर अपने जीवन में आगे बढ़ सकें। उपायुक्त नेहा सिंह ने बताया कि मिशन वात्सल्य योजना के अंतर्गत पालक देखभाल एक ऐसी व्यवस्था है, जिसमें निर्धारित प्रक्रिया और पात्रता के अनुसार देखभाल एवं संरक्षण की आवश्यकता वाले बच्चे को पालक परिवार में रहने का अवसर मिलता है।

पटाखे छोड़ रही दो बुलेट के 71 हजार रुपये के चालान, तीन बाइक इंपाउंड

- 15 साल पुराने वाहनों पर पुलिस की टेढ़ी नजर, लगातार कार्रवाई

हरिभूमि न्यूज ⏭ गन्नौर

जीटी रोड ट्रैफिक चौकी पुलिस ने पटाखे छोड़ने वाली दो बुलेट मोटरसाइकिल के 71 हजार रुपये के चालान किए हैं। इनमें एक बुलेट बिना नंबर प्लेट के चल रही थी। इसके अलावा पुलिस ने 15 साल से अधिक पुरानी तीन बुलेट मोटरसाइकिल को इंपाउंड किया है। अभियान के दौरान यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले अन्य वाहन चालकों के खिलाफ भी कार्रवाई की गई। जीटी रोड ट्रैफिक चौकी प्रभारी सोहन ने बताया कि अभियान के दौरान बिना नंबर प्लेट और पटाखे छोड़ने वाली बुलेट मोटरसाइकिल का 40,500 रुपये का चालान किया गया। वहीं, पटाखे छोड़ने वाली दूसरी बुलेट मोटरसाइकिल का 31,500 रुपये का चालान किया गया। इसके अलावा 15 साल से अधिक पुरानी तीन बुलेट मोटरसाइकिल को थाने में इंपाउंड किया गया। यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले एक दर्जन अन्य वाहन चालकों के भी चालान किए गए। चौकी प्रभारी सोहन ने वाहन चालकों को यातायात नियमों का पालन करने की हिदायत दी। उन्होंने कहा कि नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। बाजार में अवैध पार्किंग करने वाले वाहन चालकों पर भी कार्रवाई होगी। उन्होंने वाहन चालकों से निर्धारित स्थानों पर ही वाहन खड़े करने की अपील की।



गन्नौर। जीटी रोड पर चालान करते ट्रैफिक प्रभारी सोहन।

अतिक्रमण करने वालों पर भी एक्शन

उन्होंने रेलवे रोड पर अतिक्रमण करने वाले रेहड़ी संचालकों को भी नगर पालिका के निर्देशों का पालन करने और निर्धारित स्थानों पर ही रेहड़ी लगाने की हिदायत दी। नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

उदेशीपुर में घर से देसी शराब की 589 पेटियां बरामद, दिल्ली सप्लाई होनी थी

- चंडीगढ़ से लाया था आरोपी, गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ⏭ गन्नौर

गन्नौर क्राइम टीम ने गांव उदेशीपुर में एक घर के कमरे से देसी शराब की 589 पेटियां बरामद की हैं। पुलिस ने मौके से गांव निवासी चुरू को गिरफ्तार किया है।

आरोप है कि वह चंडीगढ़ से देसी शराब लाकर दिल्ली में बेचता था। पुलिस ने शराब को कब्जे में लेकर मामले की जांच शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार, गन्नौर क्राइम टीम को गांव उदेशीपुर में अवैध रूप से शराब रखे जाने और उसकी बिक्री किए जाने की गुप्त सूचना मिली थी। सूचना के आधार पर एएसआई जसवीर और विकास के नेतृत्व में टीम ने संबंधित घर पर छापा मारा। घर के अंदर बने कमरे की तलाशी लेने पर देसी शराब की 589 पेटियां बरामद हुईं।

इसके बाद पुलिस ने शराब को कब्जे में लेकर आरोपित को गिरफ्तार कर लिया। एएसआई जसवीर ने बताया कि प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, आरोपित चुरू चंडीगढ़ से देसी शराब की पेटियां लाकर दिल्ली में बेचने का काम करता था। गुप्त सूचना के आधार पर टीम ने योजनाबद्ध तरीके से कार्रवाई करते हुए शराब बरामद की। पुलिस मामले में आगे की जांच कर रही है।



गन्नौर। पुलिस कर्मचारियों की गिरफ्त में आरोपी।

!! हरे कृष्णा !!
बत्रा
सुपर स्पेशलिटी हस्पताल
A Unit of Batra Heart & Lung Institute LLP we give hope
BATRA SUPER SPECIALITY HOSPITAL
NABH ACCREDITED
24 HR Emergency
प्लॉट न. 1, रंगोली ग्रीन, सैक्टर-16, सोनीपत
Haryana Government
Delhi Government
उपलब्ध पैनल
CGHS (Central Govt. Health Scheme)
DRDO (Defence Research & Development Organisation)
CGRC (Central Electricity Regulatory Commision)
NIFTUM
RIshihood University
Ashoka University
सभी TPA उपलब्ध
LOCATION
FACILITIES
- CD ECHO - TMT
- STRESS ECHO
- HOLTER-MONITOR
- एन्जयोग्राफी
- एन्जयोप्लास्टी (छल्ला लगाना)
- पेस मेकर
- दिल की धड़कन का इलाज (RFA)
- दिल के छेद को बिना आप्रेशन बन्द करना (ASD, PDA)
- ICD, CRT-D
- बच्चों के हृदय रोग विशेषज्ञ की सुविधा
सुविधाएँ
• हृदय रोग विभाग • मेडिसिन • लैप्रोस्कॉपिक सर्जरी
• हड्डी रोग विभाग • स्त्री रोग • न्यूरोलॉजी
• गेस्ट्रोलॉजी • ICU/CCU • फीजियोथैरेपी
• डॉयटीशियन • नैप्रोलॉजी • डॉयलसिस • यूरोलॉजी
कैथ लैब
(हृदय रोगियों के ईलाज के अत्याधुनिक
IVUS, FFR, OCT, ROTA BLATION
से सुसज्जित मशीन अब हमारे यहाँ उपलब्ध है
HELPLINE 86056 86056
98127 30888, 86839 30000

फिजिकल गोल्ड, ईटीएफ और म्यूचुअल फंड के फायदे और सीमाएं

सोने में निवेश का सही रास्ता चुनें चमक ही नहीं लागत को भी देखें

खरीद-बिक्री का खर्च, सुरक्षा, निवेश की सुविधा और लागत तय करेंगे वास्तविक मुनाफा

बदलते निवेश विकल्पों ने सोने में पैसा लगाने के कई रास्ते खोले, केवल सोने के भाव बढ़ने की संभावना देखकर निवेश करना पर्याप्त नहीं, क्षमता को जानें

बिजनेस डेस्क

सोना भारतीय परिवारों के लिए केवल आभूषण या परंपरा का प्रतीक नहीं, बल्कि मुश्किल वक्त का भरोसेमंद सहारा भी रहा है। महंगाई, आर्थिक अनिश्चितता और शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव के बीच निवेशक अपने पोर्टफोलियो में सोने को जगह देना पसंद करते हैं। हालांकि, अब सोने में निवेश का मतलब केवल गहने या सिक्के खरीदकर तिजोरी में रखना नहीं रह गया है। बदलते निवेश विकल्पों ने सोने में पैसा लगाने के कई रास्ते खोल दिए हैं। कोई फिजिकल गोल्ड खरीदता है, तो कोई गोल्ड एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (ईटीएफ) या गोल्ड म्यूचुअल फंड के जरिए निवेश करता है। तीनों विकल्पों का उद्देश्य सोने की कीमत में होने वाली बढ़ोतरी से लाभ उठाना हो सकता है, लेकिन इनकी लागत, खरीदने-बेचने की प्रक्रिया, सुरक्षा और निवेश की सुविधा अलग-अलग है। इसलिए केवल सोने के भाव बढ़ने की संभावना देखकर निवेश करना पर्याप्त नहीं है। यह समझना भी जरूरी है कि कौन-सा विकल्प आपकी जरूरत, निवेश अवधि और जोखिम उठाने की क्षमता के अनुकूल है।



फिजिकल गोल्ड

फिजिकल गोल्ड में निवेश का सबसे पारंपरिक तरीका सोने के सिक्के, छड़ या आभूषण खरीदना है। इसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि निवेशक के पास सोना वास्तविक रूप में मौजूद रहता है। जरूरत पड़ने पर इसका इस्तेमाल उपहार देने, पारिवारिक आयोजनों या अन्य व्यक्तिगत जरूरतों के लिए भी किया जा सकता है। हालांकि, निवेश के नजरिये से आभूषण और सोने के सिक्के एक जैसे नहीं हैं। गहने खरीदते समय मेकिंग चार्ज और लागू वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) का खर्च जुड़ता है। दोबारा बेचने पर मेकिंग चार्ज सामान्यतः वापस नहीं मिलता। शुद्धता की जांच, दुकानदार की खरीद नीति और खरीद-बिक्री के भाव में अंतर के कारण भी वास्तविक मुनाफा घट सकता है। सिक्कों और छड़ों में आमतौर पर आभूषणों की तुलना में मेकिंग चार्ज कम होता है, फिर भी खरीद मूल्य और बिक्री मूल्य का अंतर ध्यान में रखना चाहिए। इसके अलावा, घर में सोना रखने पर चोरी या गुम होने का जोखिम रहता है। बैंक लॉकर में रखने पर अतिरिक्त खर्च हो सकता है। इसलिए जो लोग केवल निवेश के लिए सोना खरीदना चाहते हैं, उन्हें आभूषणों के बजाय कम अतिरिक्त लागत वाले विकल्पों पर विचार करना चाहिए।

गोल्ड ईटीएफ

गोल्ड ईटीएफ ऐसे निवेश फंड हैं, जिनकी इकाइयां शेयर बाजार में खरीदी और बेची जाती हैं। ये आमतौर पर भौतिक सोने में निवेश करते हैं और सोने की कीमत में होने वाले बदलाव के अनुरूप रिटर्न देने का लक्ष्य रखते हैं। इस तरह निवेशक को घर में सोना रखने, उसकी सुरक्षा करने या शुद्धता की जांच कराने की चिंता नहीं करनी पड़ती। गोल्ड ईटीएफ में निवेश के लिए सामान्यतः डीमैट और ट्रेडिंग खाते की जरूरत होती है। निवेशक बाजार खुलने के दौरान प्रचलित भाव पर यूनिट खरीद या बेच सकता है। हालांकि, वास्तविक लेनदेन मूल्य बाजार में मांग-आपूर्ति, खरीद-बिक्री के अंतर और फंड की शुद्ध परिसंपत्ति कीमत से प्रभावित हो सकता है। इस विकल्प में फंड का प्रबंधन खर्च, ब्रोकरेज और अन्य लागू शुल्क रिटर्न को प्रभावित कर सकते हैं। निवेश से पहले एक्सपेंस रेशियो, कारोबार की मात्रा और खरीद-बिक्री के भाव में अंतर की तुलना करनी चाहिए। केवल किसी ईटीएफ की एक यूनिट का भाव कम होने से यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि वह दूसरे फंड से सस्ता है। अलग-अलग फंड की एक यूनिट के पीछे सोने की मात्रा अलग हो सकती है।

गोल्ड म्यूचुअल फंड

जिन निवेशकों के पास डीमैट खाता नहीं है या जो हर महीने नियमित रकम निवेश करना चाहते हैं, उनके लिए गोल्ड म्यूचुअल फंड सुविधाजनक विकल्प हो सकते हैं। ऐसे फंड आमतौर पर गोल्ड ईटीएफ की इकाइयों में निवेश करते हैं। निवेशक इनमें एकमुश्त रकम लगा सकता है या अपनी क्षमता के अनुसार व्यवस्थित निवेश योजना (एसआईपी) के जरिए नियमित निवेश कर सकता है। इन फंडों में निवेश के लिए सामान्यतः डीमैट खाते की आवश्यकता नहीं होती। निवेशक संबंधित म्यूचुअल फंड की प्रक्रिया के अनुसार सीधे निवेश कर सकता है।

तीनों विकल्पों में कैसे करें तुलना?

- **कुल लागत:** फिजिकल गोल्ड में मेकिंग चार्ज, जीएसटी और खरीद-बिक्री का अंतर देखें। ईटीएफ व म्यूचुअल फंड में कुल खर्च की तुलना करें।
- **निवेश की सुविधा:** नियमित मासिक निवेश के लिए गोल्ड म्यूचुअल फंड सुविधाजनक हो सकता है, जबकि बाजार में खुद यूनिट खरीदने-बेचने के लिए ईटीएफ उपयोगी है।
- **सुरक्षा:** फिजिकल गोल्ड की सुरक्षा निवेशक की जिम्मेदारी है। डिजिटल निवेश विकल्पों में भौतिक भंडारण की चिंता नहीं होती, लेकिन बाजार और फंड से जुड़े जोखिम बने रहते हैं।
- **निकासी:** निवेश से पैसा निकालने की प्रक्रिया और उसमें लगने वाले समय को समझें। ईटीएफ की बिक्री बाजार के कारोबार पर निर्भर करती है, जबकि म्यूचुअल फंड में लागू निकासी नियम महत्वपूर्ण हैं।
- **कराधान:** कर नियम निवेश के प्रकार, खरीद की तारीख और लागू कानूनों के अनुसार अलग हो सकते हैं। इसलिए पुराने नियमों के आधार पर अनुमान लगाने के बजाय निवेश के समय मौजूदा कर प्रावधानों की पुष्टि करें।

पोर्टफोलियो में संतुलन जरूरी

सोने में निवेश का उद्देश्य केवल अधिकतम मुनाफा कमाना नहीं, बल्कि निवेश पोर्टफोलियो में विविधता लाना भी हो सकता है। हालांकि, सोने की कीमतें भी घटती-बढ़ती हैं और कोई भी विकल्प निश्चित रिटर्न की गारंटी नहीं देता। गोल्ड ईटीएफ और गोल्ड म्यूचुअल फंड में निवेश करने से सोने की कीमतों से जुड़ा जोखिम समाप्त नहीं होता। निवेशकों को अपनी पूरी बचत सोने में लगाने के बजाय उसे अन्य निवेश साधनों के साथ संतुलित रखने पर विचार करना चाहिए। आपातकालीन जरूरतों के लिए पर्याप्त नकदी और अपने वित्तीय लक्ष्यों के अनुरूप निवेश योजना भी जरूरी है।

14 साल में 5 करोड़ जोड़ना लक्ष्य तो निवेश की रणनीति में करें बदलाव

बिजनेस डेस्क

नौकरी शुरू करने के बाद हर व्यक्ति चाहता है कि एक समय ऐसा आए, जब उसे रोजी-रोटी के लिए काम करने की मजबूरी न रहे। आर्थिक स्वतंत्रता का यही सपना युवाओं को जल्दी निवेश शुरू करने के लिए प्रेरित करता है, लेकिन यदि कोई 28 वर्ष की उम्र में 70 हजार रुपये मासिक वेतन पाता हो और 42 वर्ष की उम्र में नौकरी छोड़कर रिटायर होना चाहता हो, तो उसके सामने चुनौती बड़ी है।

खासकर तब, जब उसका लक्ष्य 5 करोड़ रुपये फंड तैयार करना हो। इसी सवाल को समझने के लिए एक वित्तीय प्रयोग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित चैटजीपीटी से निवेश योजना तैयार कराई गई। इसमें 25 हजार की मासिक व्यवस्थित निवेश योजना (एसआईपी), हर साल निवेश में 10% बढ़ोतरी और निवेश पर सालाना 15% प्रभावी प्रतिफल की धारणा रखी गई। अनुमान के मुताबिक, 14 साल तक नियमित निवेश करने के बाद भी 42 वर्ष की उम्र में करीब 2.10 करोड़ ही जुट पाएंगे। यानी 5 करोड़ के लक्ष्य से लगभग 2.90 करोड़ रुपये कम रह जाएंगे।



25 हजार की एसआईपी और हर साल 10% निवेश बढ़ाने पर 42 साल की उम्र तक जुटेंगे 2.10 करोड़

70000 की आय में कितनी गुंजाइश

निवेश योजना बनाने से पहले आय और खर्च का हिसाब समझना जरूरी है। इस उदाहरण में निवेशक नोएडा में रहता है और उसकी मासिक आय 70 हजार रुपये है। इसमें से 14 हजार मकान के किराये पर खर्च होते हैं। राशन और घरेलू जरूरतों पर 5 हजार, बिजली-पानी पर 2 हजार, इंटरनेट और मोबाइल पर 1,500 तथा परिवहन पर 2 हजार खर्च होते हैं। बाहर खाने और अन्य मनोरंजन पर 5 हजार, व्यक्तिगत खरीदारी पर 3 हजार, बीमा और चिकित्सा पर 2,500 तथा परिवार की मदद और दूसरे विविध खर्चों पर 10 हजार खर्च होते हैं। इस तरह कुल मासिक खर्च 45 हजार बैठता है और निवेश के लिए 25 हजार बचते हैं। यानी निवेशक अपनी आय का लगभग 35.7% निवेश कर सकता है। पूरी बची रकम एसआईपी में लगाने से पहले आपातकालीन जरूरतों, अनियमित खर्चों व पर्याप्त बीमा की व्यवस्था करना जरूरी है।

हर वर्ष बढ़ेगी एसआईपी फिर लक्ष्य अधूरा

योजना में माना गया कि निवेशक की सैलरी हर साल 10% बढ़ेगी और वह अपनी एसआईपी में भी उतनी ही बढ़ोतरी करेगा। शुरुआत में 25 हजार की मासिक एसआईपी से सालाना 3 लाख निवेश होंगे। दूसरे वर्ष मासिक निवेश बढ़कर 27,500 और तीसरे वर्ष 30,250 हो जाएगा। पांचवें वर्ष तक मासिक एसआईपी करीब 36,603 पहुंचने का अनुमान है। दसवें वर्ष में यह लगभग 58,949 और चौदहवें वर्ष में करीब 86,307 हो जाएगी। इस गणना के अनुसार, 14 वर्षों में निवेशक अपनी जेब से कुल लगभग 83.92 लाख लगाएगा। यदि निवेश पर 15% प्रभावी सालाना प्रतिफल मिलता है, तो कुल निवेश का मूल्य करीब 2.10 करोड़ हो सकता है। इसमें लगभग 1.26 करोड़ संभावित निवेश वृद्धि से आएंगे।

5 करोड़ जुटाने में लगेंगे 19 साल

यदि निवेशक इसी योजना पर चलता रहे, एसआईपी हर साल 10% बढ़ाता रहे और 15% प्रभावी सालाना प्रतिफल मिलता रहे, तो 5 करोड़ का लक्ष्य लगभग 18 साल 10 महीने में हासिल होने का अनुमान है। यानी 28 वर्ष की उम्र में निवेश शुरू करने वाला व्यक्ति करीब 47 वर्ष की उम्र में इस लक्ष्य तक पहुंच सकता है। यह उसकी निर्धारित रिटायरमेंट उम्र से लगभग पांच साल बाद है। इससे स्पष्ट है कि केवल नियमित एसआईपी और वेतन के साथ बढ़ते निवेश पर निर्भर रहकर 42 वर्ष में 5 करोड़ जुटाना इस योजना के तहत संभव नहीं दिखता। लक्ष्य हासिल करने के लिए निवेश की रकम बढ़ानी होगी, मौजूदा बचत का सहारा लेना होगा, अतिरिक्त आय के स्रोत तलाशने होंगे या रिटायरमेंट की समयसीमा में बदलाव करना होगा।

लक्ष्य पाने के लिए क्या बदलना होगा

सबसे पहले, वेतन बढ़ने के साथ निवेश की रकम भी बढ़ाने पर ध्यान देना चाहिए। यदि हर साल वेतन में 10% की वृद्धि होती है, तो खर्च भी उसी अनुपात में बढ़ाना जरूरी नहीं है। वेतन वृद्धि का एक अतिरिक्त हिस्सा निवेश में लगाने से लंबी अवधि में बड़ा अंतर आ सकता है। बोनस या दूसरी अतिरिक्त आय का कुछ हिस्सा भी वित्तीय लक्ष्यों के लिए रखा जा सकता है। दूसरा, निवेश में विविधता बनाए रखना जरूरी है। लंबी अवधि में इक्विटी म्यूचुअल फंड पूंजी बढ़ाने की संभावना दे सकते हैं, लेकिन इनमें बाजार का जोखिम भी रहता है। ऋण आधारित निवेश और दूसरे साधनों का चयन निवेशक की जोखिम क्षमता, निवेश अवधि और जरूरतों के अनुरूप होना चाहिए। केवल जल्दी लक्ष्य हासिल करने के लिए अत्यधिक जोखिम लेना समझदारी नहीं है। तीसरा, महंगाई को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

आज के 5 करोड़ और 14 साल बाद के 5 करोड़ की क्रय शक्ति समान नहीं होगी। इसलिए रिटायरमेंट के समय के खर्च, स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों और भविष्य की महंगाई को ध्यान में रखकर लक्ष्य तय करना चाहिए। कर, निवेश शुल्क और रिटायरमेंट के बाद नियमित निकासी का असर भी गणना में शामिल होना चाहिए।

रिटायरमेंट का लक्ष्य बड़ी रकम नहीं

जल्दी रिटायर होने का अर्थ केवल निवेश खाते में बड़ी रकम जमा करना नहीं है। यह भी तय करना होगा कि रिटायरमेंट के बाद हर महीने कितना खर्च होगा, जमा पूंजी कितने वर्षों तक चलनी चाहिए और आपातकालीन जरूरतों के लिए कितनी रकम अलग रखनी होगी। यदि रिटायरमेंट के बाद कोई नियमित आय नहीं होगी, तो निवेश से निकासी की योजना और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।



स्मॉलकैप फंड में 25% तक रिटर्न, लेकिन निवेश से पहले जोखिम समझना भी जरूरी

बचत मंत्र

बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में तेजी के दौरान स्मॉलकैप म्यूचुअल फंड निवेशकों को आकर्षित करते हैं। छोटी कंपनियों में कारोबार बढ़ाने और तेजी से आगे निकलने की क्षमता होती है, इसलिए इनमें निवेश करने वाले फंड लंबी अवधि में बेहतर रिटर्न देने की संभावना रखते हैं। लेकिन यही निवेश बाजार में गिरावट आने पर बड़ा नुकसान भी करा सकता है। वर्ष 2025 की जनवरी-मार्च तिमाही में प्रमुख स्मॉलकैप फंडों को करीब 13 से 14 प्रतिशत तक नुकसान हुआ। वर्ष 2026 की पहली तिमाही में भी इस श्रेणी के फंडों में लगभग 12 से 13 प्रतिशत की गिरावट आई। इसके बाद अप्रैल-जून 2026 में स्मॉलकैप फंडों में करीब 23 प्रतिशत की तेजी देखने को मिली। यह उतार-चढ़ाव बताता है कि इस श्रेणी में रिटर्न की संभावना के साथ जोखिम भी काफी अधिक है। इक्विटीमास्टर की 20 अक्टूबर 2026 को प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार, पांच साल के औसत रोलिंग रिटर्न के आधार पर क्वांट स्मॉलकैप, बंधन स्मॉलकैप, इनवेस्को इंडिया स्मॉलकैप, निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप और बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप प्रमुख फंडों में शामिल हैं। इनका औसत पांच साल का रोलिंग रिटर्न करीब 22.5 से 25 प्रतिशत के बीच रहा है।

क्वांट स्मॉलकैप फंड

पांच साल के औसत रोलिंग रिटर्न में क्वांट स्मॉलकैप फंड करीब 25.04 प्रतिशत के साथ पहले स्थान पर है। रिपोर्ट के मुताबिक, इसका वर्तमान पांच साल का रिटर्न लगभग 17.84 प्रतिशत है। फंड के प्रमुख निवेश में एचएफसीएल, आरबीएल बैंक, अडाणी एंटरप्राइजेज, अडाणी पावर और एजिस लॉजिस्टिक्स शामिल हैं। रिपोर्ट के अनुसार, इसकी तीन साल की वार्षिकीकृत अस्थिरता 18.2 प्रतिशत रही।

बंधन स्मॉलकैप फंड

बंधन स्मॉलकैप फंड लगभग 24.4 प्रतिशत के औसत पांच साल के रोलिंग रिटर्न के साथ दूसरे स्थान पर है। रिपोर्ट में इसका वर्तमान पांच साल का रिटर्न करीब 19 प्रतिशत बताया गया है। इसकी खासियत बेहतर जोखिम-समायोजित प्रदर्शन है। रिपोर्ट के अनुसार, प्रमुख फंडों में इसका शार्प और सॉर्टिनो अनुपात बेहतर रहा है। ये अनुपात बताते हैं कि किसी फंड ने कितना जोखिम उठाकर कितना रिटर्न दिया। इस फंड का आकार तेजी से बढ़ा है। मार्च 2022 में इसकी प्रबंधनाधीन संपत्ति करीब 1,410 करोड़ रुपये थी, जो अगस्त 2026 में बढ़कर लगभग 34,180 करोड़ रुपये हो गई।

इनवेस्को इंडिया स्मॉलकैप फंड

इनवेस्को इंडिया स्मॉलकैप फंड करीब 24.05 प्रतिशत के औसत पांच साल के रोलिंग रिटर्न के साथ तीसरे स्थान पर है। रिपोर्ट के मुताबिक, इसका वर्तमान पांच साल का रिटर्न 18.49 प्रतिशत रहा, जबकि निफ्टी स्मॉलकैप 250 का रिटर्न 12.42 प्रतिशत था। तीन साल की अवधि में भी इस फंड का प्रदर्शन अपने बेंचमार्क से बेहतर रहा। फंड का निवेश विभिन्न कंपनियों में फैला है। इसकी प्रमुख हिस्सेदारियों में साई लाइफ साइंसेज, इटर्नल, एम्बर एंटरप्राइजेज, आदित्य इन्फोटेक और कृष्णा इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज शामिल हैं।

निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड

निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड इस श्रेणी के बड़े फंडों में शामिल है। रिपोर्ट में इसकी प्रबंधनाधीन संपत्ति करीब 81,000 करोड़ है। इसका औसत पांच साल का रोलिंग रिटर्न लगभग 24 प्रतिशत और वर्तमान पांच साल का रिटर्न करीब 17.1 प्रतिशत रहा। फंड के पोर्टफोलियो में बड़ी संख्या में शेयर शामिल हैं और किसी एक कंपनी में निवेश का हिस्सा अपेक्षाकृत सीमित रखा गया है। रिपोर्ट के अनुसार, इसकी तीन साल की अस्थिरता शीर्ष पांच फंडों में सबसे कम, करीब 17.5 प्रतिशत रही।

बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप फंड

बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप फंड करीब 22.55 प्रतिशत के औसत पांच साल के रोलिंग रिटर्न के साथ पांचवें स्थान पर है। इसका वर्तमान पांच साल का रिटर्न लगभग 18.75 प्रतिशत रहा। इसके प्रत्यक्ष निवेश विकल्प का वार्षिक व्यय अनुपात 0.42 प्रतिशत बताया गया है। रिपोर्ट में इसकी तीन साल की वार्षिकीकृत अस्थिरता 20 प्रतिशत बताई गई है, शीर्ष पांच फंडों में सबसे अधिक है।

इन बातों का रखें ध्यान

स्मॉलकैप फंड में निवेश करने से पहले केवल एक, तीन या पांच साल का रिटर्न देखकर फैसला करना पर्याप्त नहीं है। यह भी देखना चाहिए कि बाजार में गिरावट के दौरान फंड ने कैसा प्रदर्शन किया, उसका पोर्टफोलियो कितना विविध है।

रिटायरमेंट पर एनपीएस का पूरा पैसा निकालना जरूरी नहीं

60 साल की उम्र के बाद निकासी टालने और चरणबद्ध तरीके से पैसा लेने के विकल्प

अलर्ट

बिजनेस डेस्क

नौकरी के दौरान नियमित बचत करके रिटायरमेंट के लिए बड़ा फंड तैयार करना जितना जरूरी है, उतना ही अहम यह तय करना भी है कि रिटायरमेंट के बाद उस पैसे का इस्तेमाल कैसे किया जाए।

सामान्य निकासी में फड की राशि और ग्राहक की श्रेणी के अनुसार तय होंगे नियम

नेशनल पेंशन सिस्टम (एनपीएस) में निवेश करने वाले कई लोगों को लगता है कि 60 साल की उम्र पूरी होते ही उन्हें पूरा पैसा निकालना होगा या फिर तुरंत पेंशन शुरू करनी पड़ेगी। लेकिन ऐसा हर स्थिति में जरूरी नहीं है। पेंशन फंड नियामक एवं विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) के नियमों में निवेशकों को निकासी और पेंशन की योजना बनाने के लिए कई विकल्प दिए गए हैं। इनमें एकमुश्त रकम निकालने, निकासी को आगे टालने और निर्धारित अवधि में किस्तों के जरिए पैसा लेने जैसे विकल्प शामिल हैं। हालांकि, कौन-सा विकल्प उपलब्ध होगा और कितनी रकम निकाली जा सकेगी, यह एनपीएस खाते की श्रेणी, कुल जमा फंड और लागू नियमों पर निर्भर करता है। इसलिए रिटायरमेंट के करीब पहुंच रहे निवेशकों को पहले अपने खाते पर लागू प्रावधान समझने चाहिए।



60 साल बाद कितना पैसा निकाल सकते हैं?

एनपीएस से सामान्य निकासी के नियम सभी निवेशकों के लिए एक जैसे नहीं हैं। गैर-सरकारी क्षेत्र के सामान्य एनपीएस खातों में लागू नियमों के अनुसार, यदि जमा पेंशन फंड 8 लाख तक है, तो पूरी रकम एकमुश्त निकालने का विकल्प उपलब्ध हो सकता है। इससे अधिक राशि होने पर निकासी की सीमा और शेष रकम के इस्तेमाल के नियम लागू होते हैं। कुछ परिस्थितियों में 8 लाख से अधिक और 12 लाख तक के फंड के लिए भी अलग विकल्प दिए गए हैं। बड़े फंड के मामले में लागू नियमों के अनुसार एक हिस्सा एकमुश्त निकाला जा सकता है, जबकि शेष रकम का इस्तेमाल एन्युटी खरीदने या निर्धारित अवधि में चरणबद्ध निकासी के लिए किया जा सकता है। सरकारी क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए अलग प्रावधान लागू हो सकते हैं। इसलिए यह मान लेना ठीक नहीं है कि हर एनपीएस खाताधारक को अनिवार्य रूप से केवल 60% रकम ही निकालने की अनुमति है।एनपीएस के पुराने नियमों में सामान्य निकासी के समय अधिकतम 60% रकम एकमुश्त निकालने और कम से कम 40% रकम से एन्युटी खरीदने का प्रावधान प्रमुख था। बाद के संशोधनों में कुछ श्रेणियों के लिए विकल्पों का विस्तार किया गया है। ऐसे में निकासी का निर्णय लेने से पहले नवीनतम नियम और अपने खाते की श्रेणी की पुष्टि करना जरूरी है।

निकासी टालने का विकल्प

यदि किसी निवेशक को 60 साल की उम्र में तुरंत पूरे फंड की जरूरत नहीं है, तो वह नियमों के अनुसार निकासी या एन्युटी खरीदने की प्रक्रिया को आगे टालने पर विचार कर सकता है। गैर-सरकारी क्षेत्र के सामान्य एनपीएस खातों में लागू प्रावधानों के तहत पात्र निवेशक 75 साल की उम्र तक खाते में बने रहने या निकासी को स्थगित करने के विकल्प का इस्तेमाल कर सकते हैं। इस दौरान खाते में निवेशित रकम बाजार के प्रदर्शन के अनुसार बढ़ या घट सकती है। इसका अर्थ यह नहीं है कि फंड पर निश्चित ब्याज मिलता रहेगा। इक्विटी और बॉन्ड में निवेश की मात्रा के अनुसार जोखिम और संभावित रिटर्न बदल सकते हैं।

किस्तों में पैसा लेने की सुविधा

एनपीएस में चरणबद्ध निकासी के विकल्प भी उपलब्ध हैं। इसके तहत पात्र निवेशक पूरी निकासी एक साथ करने के बजाय निर्धारित अंतराल पर रकम ले सकते हैं। कुछ विकल्पों में एकमुश्त निकासी वाली रकम को किस्तों में लेने की सुविधा मिलती है, जबकि व्यवस्थित यूनिट निकासी के तहत निवेश की यूनिटें निर्धारित समय के अनुसार भुनाई जाती हैं। यह व्यवस्था म्यूचुअल फंड की व्यवस्थित निकासी योजना जैसी लग सकती है, लेकिन दोनों को एक जैसा नहीं समझना चाहिए।

एन्युटी से कैसे मिलेगी पेंशन?

एन्युटी एक ऐसा वित्तीय उत्पाद है, जिसे बीमा कंपनी से खरीदने पर चुनी गई योजना की शर्तों के अनुसार नियमित पेंशन मिलती है। एनपीएस में लागू नियमों के तहत कुछ स्थितियों में फंड का एक हिस्सा एन्युटी खरीदने के लिए इस्तेमाल करना पड़ता है। इससे रिटायरमेंट के बाद नियमित आय का स्रोत बन सकता है। एन्युटी खरीदने से पहले उसकी पेंशन दर, भुगतान की शर्तें, जीवनसाथी को मिलने वाले लाभ और मृत्यु के बाद खरीद मूल्य की वापसी जैसे विकल्पों को समझना चाहिए। अलग-अलग योजनाओं में मिलने वाली पेंशन और शर्तें अलग हो सकती हैं। एन्युटी का चुनाव केवल अनुमानित मासिक पेंशन देखकर नहीं करना चाहिए।

इन बातों पर दें ध्यान

सबसे पहले अपने एनपीएस खाते की श्रेणी और जमा फंड की मौजूदा राशि की जांच करें। इसके बाद यह तय करें कि रिटायरमेंट के बाद मासिक खर्च चलाने के लिए कितनी रकम चाहिए और अन्य स्रोतों से कितनी आय मिलेगी। यदि तुरंत बड़ी रकम की जरूरत है, तो एकमुश्त निकासी का विकल्प उपयोगी हो सकता है। वहीं नियमित आय की जरूरत होने पर एन्युटी या चरणबद्ध निकासी पर विचार किया जा सकता है। खाते में नामांकित व्यक्ति, बैंक खाते और अन्य जरूरी विवरण भी अपडेट रखें। निकासी से जुड़े कर नियमों की पुष्टि करना न भूलें। यह मानकर न चलें कि एनपीएस से निकाली गई हर रकम और उससे बाद में होने वाली कमाई हमेशा कर-मुक्त होगी।

आरएचपी में कारोबार, वित्तीय स्थिति, प्रमोटर्स के रिकॉर्ड को देखें

आईपीओ में पैसा लगाने से पहले परखें कंपनी की असली ताकत

- गई रकम के इस्तेमाल और शेयर के मूल्यांकन की भी जांच जरूरी
- केवल लिस्टिंग गेन की उम्मीद में निवेश करना पड़ सकता है भारी

बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में जब भी किसी कंपनी का आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) आता है, निवेशकों के बीच उसे लेकर उत्सुकता बढ़ जाती है। ग्रे मार्केट प्रीमियम, संभावित लिस्टिंग गेन और दूसरे निवेशकों की दिलचस्पी के आधार पर कई लोग आवेदन करने का फैसला कर लेते हैं, लेकिन किसी आईपीओ में भारी मांग होना इस बात की गारंटी नहीं है कि कंपनी भी उतनी ही मजबूत है या उसके शेयर से अच्छा मुनाफा मिलेगा। कई बार आकर्षक प्रचार के पीछे कमजोर वित्तीय स्थिति, बढ़ता कर्ज या जरूरत से ज्यादा मूल्यांकन छिपा हो सकता है। ऐसे में निवेशकों के लिए जरूरी है कि वे कंपनी की असली स्थिति समझने के बाद ही पैसा लगाने का फैसला करें। इसके लिए रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (आरएचपी) एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इसमें कंपनी के कारोबार, वित्तीय प्रदर्शन, जोखिम, प्रबंधन, प्रमोटर्स और आईपीओ से जुटाई जाने वाली रकम के इस्तेमाल की जानकारी दी जाती है। दस्तावेज बड़ा जरूर होता है, लेकिन कुछ अहम पहलुओं पर ध्यान देकर निवेशक बेहतर निर्णय ले सकते हैं।

1. कंपनी का कारोबार और कमाई का आधार समझें

आईपीओ में निवेश करने से पहले सबसे पहले यह समझें कि कंपनी क्या कारोबार करती है, उसके ग्राहक कौन हैं और उसकी कमाई किन उत्पादों या सेवाओं से होती है। यह भी देखें कि कंपनी जिस क्षेत्र में काम करती है, वहां भविष्य में कारोबार बढ़ने की कितनी संभावनाएं हैं और प्रतिस्पर्धा कितनी कड़ी है। केवल कंपनी के विस्तार संबंधी दावों पर भरोसा करना पर्याप्त नहीं है। पिछले तीन वित्तीय वर्षों की बिक्री, मुनाफे और नकदी प्रवाह के आंकड़ों की तुलना करें। अगर बिक्री लगातार बढ़ रही है, लेकिन मुनाफा स्थिर है या घट रहा है, तो इसकी वजह जानना जरूरी है। इसी तरह, कंपनी के खाते में मुनाफा दिखने के बावजूद अगर उसके नियमित कारोबार से पर्याप्त नकदी नहीं आ रही है, तो यह चिंता का संकेत हो सकता है। यह भी देखें कि कंपनी की कमाई कुछ ही बड़े ग्राहकों पर निर्भर तो नहीं है।

2. प्रमोटर्स और प्रबंधन का पिछला रिकॉर्ड जांचें

कंपनी की सफलता में उसके प्रबंधन और प्रमोटर्स की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इसलिए आरएचपी में उनके अनुभव, पिछली कारोबारी गतिविधियों और कंपनी चलाने के तरीके से जुड़ी जानकारियों पर ध्यान दें। देखें कि प्रमोटर्स ने पहले किन कारोबारों में काम किया है और उनका रिकॉर्ड कैसा रहा है। कंपनी के प्रमुख अधिकारियों के वेतन, प्रमोटर्स की हिस्सेदारी और गिरवी रखे गए शेयरों की जानकारी भी उपयोगी हो सकती है। इसके अलावा, कंपनी या उसके प्रमुख अधिकारियों के खिलाफ चल रहे महत्वपूर्ण कानूनी मामलों, नियामकीय कार्रवाई और वित्तीय अनियमितताओं से जुड़े खुलासों को ध्यान से पढ़ें।

3. प्रमोटर्स से जुड़ी कंपनियों के लेनदेन पर नजर रखें

कई कंपनियां अपने प्रमोटर्स, उनके परिवार के सदस्यों या उनसे जुड़ी दूसरी संस्थाओं के साथ कारोबार करती हैं। इन्हें संबंधित पक्षों के साथ लेनदेन कहा जाता है। ऐसे लेनदेन अपने आप में गलत नहीं हैं, लेकिन इनकी रकम, शर्तों और कारोबारी औचित्य की जांच जरूरी है। आरएचपी में देखें कि कंपनी प्रमोटर्स से जुड़ी संस्थाओं को कितना भुगतान करती है, उनसे कितना सामान या सेवाएं खरीदती है और उन्हें कितना पैसा देती है। यह भी समझें कि लेनदेन सामान्य कारोबारी शर्तों पर हो रहा है या नहीं। पिछले तीन वर्षों के आंकड़ों में अचानक बड़ी बढ़ोतरी, असामान्य भुगतान या संबंधित पक्षों के साथ लगातार बढ़ते लेनदेन दिखाई दें, तो उनकी वजह तलाशें।

4. आईपीओ से जुटाई जाने वाली रकम का इस्तेमाल जानें

आईपीओ में आवेदन करने से पहले यह समझना जरूरी है कि कंपनी निवेशकों से पैसा क्यों जुटा रही है। आम तौर पर आईपीओ में फ्रेश इश्यू और ऑफर फॉर सेल (ओएफएस) शामिल हो सकते हैं। फ्रेश इश्यू में कंपनी नए शेयर जारी करके रकम जुटाती है, जबकि ओएफएस में मौजूदा शेयरधारक अपने शेयर बेचते हैं। ओएफएस से मिलने वाली रकम कंपनी के बजाय शेयर बेचने वाले निवेशकों को मिलती है। आरएचपी में देखें कि फ्रेश इश्यू से मिलने वाले पैसे का इस्तेमाल किस उद्देश्य से किया जाएगा। कंपनी कर्ज चुकाना चाहती है, नई उत्पादन क्षमता स्थापित करना चाहती है, कारोबार का विस्तार करना चाहती है या सामान्य कॉरपोरेट जरूरतों के लिए रकम जुटा रही है? इन उद्देश्यों का कंपनी की भविष्य की वृद्धि पर क्या असर पड़ सकता है, इसे समझें। अगर कंपनी कर्ज चुकाने के लिए पैसा जुटा रही है, तो इससे उसकी वित्तीय स्थिति में सुधार हो सकता है।

5. शेयर का मूल्यांकन और जोखिम जरूर परखें

अच्छी कंपनी का आईपीओ भी खराब निवेश साबित हो सकता है, अगर उसके शेयर बहुत महंगे मूल्य पर पेश किए जा रहे हों। इसलिए कंपनी की वित्तीय स्थिति के साथ उसके मूल्यांकन की तुलना भी जरूरी है। आरएचपी में कंपनी की प्रति शेयर आय, मूल्य-आय अनुपात (पी/ई), शुद्ध परिसंपत्ति मूल्य और दूसरी वित्तीय जानकारियों को देखें। समान कारोबार करने वाली सूचीबद्ध कंपनियों के मूल्यांकन से इसकी तुलना करें। यह समझने की कोशिश करें कि कंपनी जिस कीमत पर शेयर पेश कर रही है, क्या उसका आधार मौजूदा कमाई, भविष्य की वृद्धि और कारोबारी संभावनाओं से मेल खाता है।



एचआईवी एड्स जागरूकता शिविर में 32 लोगों की हुई जांच

खरखौदा। स्थानीय सब्जी मंडी में शनिवार को एचआईवी/एड्स और सिफलिस के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से जागरूकता एवं जांच शिविर आयोजित किया गया। शिविर में कुल 32 व्यक्तियों की जांच की गई। उक्त कार्यक्रम हरियाणा स्टेट एड्स कंट्रोल सोसायटी के लक्षित हस्तक्षेप कार्यक्रम के तहत आयोजित किया गया।जानकारी के अनुसार, कार्यक्रम का आयोजन एजुकेशन सोसायटी द्वारा किया गया। जबकि हरियाणा स्टेट एड्स कंट्रोल सोसायटी की ओर से इसे प्रायोजित किया गया। शिविर का उद्देश्य लोगों को एचआईवी/एड्स और सिफलिस जैसे संक्रमणों के प्रति जागरूक करना तथा समय पर जांच के महत्व की जानकारी देना था। इस प्रकार के जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों को स्वास्थ्य संबंधी सही जानकारी उपलब्ध कराने और संक्रमणों को लेकर फैली भ्रांतियों को दूर करने का प्रयास किया जाता है।

जीडी मेमोरियल स्कूल और शंभू दयाल मॉडर्न स्कूल में मातृ-पितृ पूजन कार्यक्रम

छात्रों में भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों, माता पिता के प्रति आदर एवं सेवा भाव किया जागृत

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत





सोनीपत। शंभू दयाल मॉडर्न स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में माता-पिता का पूजन कर आशीर्वाद लेते विद्यार्थी, सोनीपत के जेडी मेमोरियल स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में विद्यार्थियों को माता-पिता के प्रति सेवाभाव की शपथ दिलाते स्टाफ सदस्य। **फोटो : हरिभूमि**

नैतिक और सांस्कृतिक प्रशिक्षण फाउंडेशन (आईएमसीटीएफ) की पहल पर आईटीआई चौक स्थित जेडी मेमोरियल स्कूल और शंभू दयाल मॉडर्न स्कूल में शनिवार को मातृ-पितृ पूजन कार्यक्रम का श्रद्धा एवं उत्साह के साथ आयोजन किया गया। दोनों विद्यालयों में विद्यार्थियों ने अपने माता-पिता का पूजन कर उनके प्रति प्रेम, सम्मान एवं कृतज्ञता व्यक्त की। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों तथा माता-पिता के प्रति आदर एवं सेवा भाव जागृत करना रहा। कार्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को संदेश दिया गया कि माता-पिता हमारे प्रथम गुरु हैं। उनका सम्मान करना हमारी संस्कृति एवं संस्कारों का अभिन्न अंग है।

जेडी मेमोरियल स्कूल में एचएसएसएफ हरियाणा के प्रांतीय सह सचिव आशीष अग्रवाल, सदस्य अशोक गोयनका, विद्यालय की संस्थापिका पूनम राय ने शिरकत की। कार्यक्रम में करीब 100 विद्यार्थियों एवं 15 अभिभावकों ने भाग लिया। मंच संचालन रंजना ने किया। व्यवस्थाओं की जिम्मेदारी रितु सचदेवा ने संभाली। कार्यक्रम के सफल आयोजन में शिक्षिका नेहा व शिक्षक रोहित का सहयोग रहा।

वहीं, शंभू दयाल मॉडर्न स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में एचएसएसएफ के प्रांतीय संरक्षक एवं गेटवे एजुकेशन, सोनीपत के चेयरमैन राकेश अग्रवाल ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की।

400 विद्यार्थियों व 50 अभिभावकों ने सहभागिता की

कार्यक्रम में शंभू दयाल संस्था के अध्यक्ष प्रदीप गौतम, एचएसएसएफ के प्रांतीय सचिव राजीव गुप्ता, प्रांतीय सह सचिव डॉ. आरके गुप्ता, आशीष अग्रवाल, सदस्य अशोक गोयनका मौजूद रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय के प्रधानाचार्य सौरभ शर्मा ने की। कार्यक्रम में करीब 400 विद्यार्थियों व 50 अभिभावकों ने सहभागिता की। मंच संचालन पूजा पाराशर ने किया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में विद्यालय की शिक्षिका नेहा मित्तल, मंजू, इंदु, परसून का महत्वपूर्ण सहयोग रहा।

न्यूज डायरी



संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस मनाया

खरखौदा। शहीद दलबीर सिंह राजकीय महाविद्यालय में प्राचार्या प्रो. तराना नेगी के मार्गदर्शन में संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस और भारत-तिब्बत सीमा पुलिस के स्थापना दिवस के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर रक्षा अध्ययन विभाग द्वारा छात्र-छात्राओं के लिए एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन रक्षा अध्ययन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. योगेश बाजवान और सहायक प्राध्यापक विनोद मलिक द्वारा किया गया। कार्यक्रम में विनोद मलिक ने संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्यों और आईटीबीपी के गौरवशाली इतिहास व देश की सुरक्षा में उसके योगदान के बारे में विस्तार से जानकारी दी।



'इमैजिनेरियम 2026' कार्यक्रम में छात्रों ने दिखाई प्रतिभा

सोनीपत। ऋषिकुल विद्यापीठ में शनिवार को 'इमैजिनेरियम 2026' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों की रचनात्मकता, नवाचार, कल्पनाशीलता और बहुआयामी प्रतिभाओं को मंच प्रदान करना रहा। साहित्य, संगीत, नृत्य, कला, विज्ञान, गणित, तकनीक एवं संस्कृति से जुड़ी विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर मिला। कुछ प्रतियोगिताएं रिकॉर्डेड प्रारूप में भी आयोजित की गईं। विद्यालय के चेयरमैन एसके शर्मा ने कहा कि विद्यार्थियों की प्रतिभा को पहचानना और उन्हें अपनी क्षमताओं को प्रदर्शित करने के अवसर प्रदान करना शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य है। निदेशक धीरज शर्मा ने कहा कि 'इमैजिनेरियम 2026' जैसे आयोजन विद्यार्थियों में नवाचार, रचनात्मक सोच और व्यावहारिक कौशल विकसित करने में सहायक हैं। ग्लोबल आउटरीच डायरेक्टर अर्चना शर्मा ने कहा कि ऐसे आयोजन विद्यार्थियों को व्यापक दृष्टिकोण अपनाने, नई संभावनाओं को तलाशने और विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए प्रेरित करते हैं। उप-प्रधानाचार्य कृति चौधरी ने कहा कि विद्यार्थियों को अपनी रुचि और प्रतिभा के अनुसार विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने के अवसर मिलना आवश्यक है। प्रधानाचार्य उमेश शर्मा ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल किताबी ज्ञान देना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना भी है। ग्रुप सांग में आर इंटरनेशनल स्कूल प्रथम रहा।

न्यूज डायरी



मीनू, भारती और रेनू ने जीते प्रथम तीन स्थान

गोहाना। महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा शनिवार को गोहाना खंड स्तरीय सर्वोच्च माता पुरस्कार प्रतियोगिता आयोजित की गई। कार्यक्रम कमी अध्यक्षता महिला एवं बाल विकास परियोजना अधिकारी सुशीला देवी ने की। मुख्य अतिथि स्वास्थ्य विभाग से डॉ. चक्रवर्ती शर्मा ने माताओं एवं आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को बच्चों के स्वास्थ्य एवं सर्वांगीण विकास के लिए टीकाकरण, संतुलित आहार और पोषण के महत्व के बारे में जानकारी दी। इस प्रतियोगिता में गांव गढ़ी उजाले खां की मीनू ने प्रथम, गढ़ी सराय नामदार खां की भारती ने द्वितीय तथा गोहाना की रेनू ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस अवसर पर सर्कल सुपरवाइजर इंद्रावती, सविता, पूनम, रेखा, सविता, अंजलि, नीलम और सपना, आंकड़ा सहायक सुमन, लिपिक विकास व लेखपाल प्रवीण सहित अन्य संबंधित कर्मचारी उपस्थित रहे।

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में टीम ए रही विजेता



खरखौदा। सावित्री बाई फुले राजकीय कन्या महाविद्यालय के हिंदी व संस्कृत विभाग द्वारा प्राचार्य प्रोफेसर अनिल कुमार की अध्यक्षता में महर्षि वाल्मीकि जयंती के अवसर पर एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का मुख्य विषय- महर्षि वाल्मीकि जीवन, रामायण एवं भारतीय संस्कृति रहा। छात्राओं से वाल्मीकि रामायण, रामायण के पात्रों, आदिकाव्य की प्रासंगिकता तथा भारतीय मूल्यों से संबंधित प्रश्न पूछे गए। प्राचार्य ने कहा कि महर्षि वाल्मीकि केवल रामायण के रचयिता ही नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति के प्रथम कवि हैं। ऐसे आयोजनों से विद्यार्थियों में अपनी संस्कृति और साहित्य के प्रति गौरव की भावना जागृत होती है। हिंदी एवं संस्कृत विभाग की प्राध्यापिकाओं डॉ. प्रमिला और डॉ. ममता ने बताया कि इस प्रकार की प्रतियोगिताएं छात्राओं के ज्ञानवर्धन के साथ-साथ उनमें नैतिक मूल्यों का भी संचार करती हैं। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता को टीम ए और टीम बी के रूप में रखा गया। टीम ए जिसमें छात्राएं मेघा सिमरन मीनाक्षी शालू आदि की टीम विजयी रही।



कांग्रेसियों ने वोट बचाओ-देश बचाओ मार्च निकाला

गोहाना। हरियाणा प्रदेश कांग्रेस कमेटी के निर्देश पर शनिवार को लोकतंत्र बचाओ अभियान के तहत शहर में बरोदा मार्ग स्थित पार्टी विधानसभा कार्यालय में मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार का पुतला फूंका गया। इससे पहले पार्टी नेताओं और कार्यकर्ताओं ने हाथ में बड़ा बैनर लेकर प्रदर्शन करते हुए वोट बचाओ-देश बचाओ मार्च निकाला। कार्यक्रम का मार्गदर्शन पूर्व मंत्री जगबीर सिंह मलिक और बरोदा हलका के विधायक इंदुराज नरवाल के बड़े भाई इंदुपाल नरवाल का रहा। जगबीर सिंह मलिक ने कहा कि भाजपा की तानाशाही और चुनाव आयोग की लाचारी ने भारत के लोकतंत्र को संकट में डाल दिया है। प्रदर्शन में रघुवीर जागसी, राकेश शर्मा, धर्मपाल नरवाल, रवि इंदौरा, राजेश गंगाना, जगशेर नूरनखेड़ा, सतपाल धानक, सुनील बुला व सुनील कुंडू शामिल रहे।

एनसीसी कैडेट्स ने निकाली टीबी जागरूकता रैली



सोनीपत। टीकाराम कन्या महाविद्यालय की एनसीसी यूनिट की ओर से शनिवार को टीबी (क्षय रोग) जागरूकता रैली निकाल लोगों को जागरूकता का संदेश दिया। रैली एनसीसी सीटीओ दीपशिखा व डॉ. स्वाति के नेतृत्व में निकाली गई। रैली को महाविद्यालय से प्राचार्य व स्टाफ सदस्यों ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस दौरान उप-प्राचार्य गीता स्टाफ सदस्य मौजूद रहे।

छात्राओं को पेटेंट व ट्रेडमार्क का महत्व बताया



सोनीपत। जीवीएम कन्या महाविद्यालय की इंस्टीट्यूशन इनोवेशन काउंसिल (आईआईसी) ने आईपीआर सेल के सहयोग से बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का उद्देश्य छात्राओं को बौद्धिक रचनाओं, नवाचारों और मौलिक विचारों की सुरक्षा के महत्व से अवगत कराना रहा। कार्यक्रम को पेटेंट इंफॉर्मेशन सेंटर, हरियाणा, हरियाणा राज्य विज्ञान, नवाचार एवं प्रौद्योगिकी परिषद (एचएससीएसआईटी) व विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी निदेशालय, हरियाणा का सहयोग मिला। कार्यशाला का शुभारंभ सरस्वती वंदना, कॉलेज प्राचार्य डॉ. मंजुला स्पाह, एचएससीएसआईटी के निदेशक डॉ. राहुल तनेजा ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया। इस दौरान आईआईसी एवं आईपीआर समन्वयक डॉ. प्रवीण शर्मा, डॉ. संगीता सिंह, प्रीति, डॉ. रेनू, अंशु, डॉ. तमन्ना कुमारी, डॉ. सोनिया मित्तल, रुचिका विरमानी, डॉ. निहारिका, डॉ. अनीता सैनी व सुमन मौजूद रही।



करियर निर्माण : विशेषज्ञों ने विद्यार्थियों का किया मार्गदर्शन

गोहाना। ग्लोबल पब्लिक स्कूल, गोहाना में शनिवार को कक्षा 10वीं, 11वीं व 12वीं के विद्यार्थियों के लिए काउंसलिंग सत्र आयोजित किया गया। कार्यक्रम चंडीगढ़ विवि, लवली प्रोफेशनल विवि, चितकारा विवि, पारुल विवि और ग्राफिक एरा प्रोफेशनल विवि के विशेषज्ञों ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए कक्षा 10वीं के बाद डिप्लोमा एवं स्किल कोर्स करने की सलाह दी। विशेषज्ञों ने नीट, जेईई, सीयूईटी, सीएलएटी व एनडीए जैसे प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के साथ बीटेक, एमबीबीएस, एमबीए, बीसीए व डिजाइनिंग और उनके कॅरियर स्कोप के बारे में विस्तृत जानकारी दी। विद्यार्थियों को बताया गया कि अपनी रुचि के अनुसार सही कोर्स का चुनाव कैसे करें। प्राचार्या डॉ. प्रीति शर्मा जी ने बताया कि आज के प्रतिस्पर्धी युग में केवल अच्छे अंक लाना पर्याप्त नहीं है अपितु सही समय पर सही मार्गदर्शन मिलना भी जरूरी है।

अटायल से भौरा तक 53.54 लाख से बनी सड़क, चौड़ाई 12 से बढ़ाकर 18 फीट हुई

- विधायक देवेंद्र कादियान ने 78 .04 लाख के विकास कार्यों का किया उद्घाटन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गन्नौर



गन्नौर। विधायक देवेंद्र कादियान ने गांव में करीब 78 .04 लाख रुपये की लागत से हुए विकास कार्यों का नारियल फोड़कर उद्घाटन करते। **फोटो : हरिभूमि**

गांवों में बुनियादी सुविधाएं मजबूत करने की दिशा में अटायल गांव को विकास कार्यों की सौगात मिली है। विधायक देवेंद्र कादियान ने गांव में करीब 78.04 लाख रुपये की लागत से हुए विकास कार्यों का नारियल फोड़कर उद्घाटन किया। इनमें अटायल से भौरा तक बनी सड़क प्रमुख है। लंबे समय से खस्ताहाल इस सड़क का निर्माण 53.54 लाख रुपये की लागत से कराया गया है। सड़क की चौड़ाई भी 12 फीट से बढ़ाकर 18 फीट की गई है। इससे ग्रामीणों और राहगीरों को आवागमन में राहत मिलेगी। इसके अलावा 20.50 लाख रुपये की लागत से माडे वाले तालाब की चारदीवारी का निर्माण कराया गया है। वहीं, विद्यानंद के खेत से महासिंह के खेत तक 4 लाख रुपये की लागत से रास्ता बनाया गया है। कार्यक्रम में पहुंचने पर ग्रामीणों ने विधायक का फूलमालाओं से स्वागत किया। इस दौरान ग्रामीणों ने गांव की विभिन्न समस्याएं उनके सामने रखीं। विधायक ने संबंधित अधिकारियों को फोन कर समस्याओं के समाधान के निर्देश दिए। विधायक देवेंद्र कादियान ने कहा कि विकास कार्यों में गुणवत्ता का ध्यान रखने और लोगों को उनका लाभ सुनिश्चित करने के लिए प्रयास जारी रहेंगे। इस अवसर पर सोहन सरपंच, विजय, नेत्रपाल , कर्मपाल,काला, रामफूल, हंसराज, अनिल, सम्मा, जितेंद्र पांचाल, कृष्ण, गुरदियाल छोक्कर समेत गणमान्य लोग मौजूद रहे।

बाबा जिंदा मेले में उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़, समाधि पर माथा टेक मांगी मन्नतें

गन्नौर। गांव मोई स्थित ऐतिहासिक तीर्थ स्थान बाबा जिंदा के मेले में दूसरे दिन विभिन्न राज्यों से आए श्रद्धालुओं बाबा जिंदा की समाधि पर माथा टेका। मेले में पुख्ता पुलिस व्यवस्था होने से श्रद्धालुओं को किसी तरह की कोई परेशानी नही हुई। डेरा के संचालक महंत बाबा बालकनाथ ने मेले में आए श्रद्धालुओं को उनके घर व पशुओं में सुख शांति के लिए डोरे व भभूत का प्रसाद देकर आशीर्वाद दिया। बाबा जिंदा पर लगे मेले में खिलौनों व मिठाइयों के स्टालों पर बच्चों व महिलाओं ने जहां जमकर खरीदारी की, वहीं बच्चों ने झूलों का भी आनंद लिया। मेले के दूसरे दिन काफी संख्या में श्रद्धालुओं ने गुड़ व झाड़ू चढ़ा कर मन्नतें मांगी। मान्यता है कि पशुओं में किसी भी तरह की बीमारी हो या फिर मनुष्य किसी भी तरह से परेशान हो तो बाबा जिंदा की समाधि पर सवा 5 किलो गुड़ व झाड़ू चढ़ा कर मन्नतें मांगी जाती हैं। मन्नतें पूरी होने पर श्रद्धालु यहां आकर गुड़ व दूध चढ़ाते है। भविष्य में उन्हें किसी प्रकार की परेशानी न हो।



वैश्विक रोजगारपरक कौशल विकास एवं उद्योग शिक्षा सहयोग को बढ़ावा देगा गेटवे कॉलेज



सोनीपत। गेटवे इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (जीआईईटी), सोनीपत के प्राचार्य डॉ. विशाल जैन ने नई दिल्ली स्थित ऑस्ट्रेलियाई उच्चायोग में आयोजित वैश्विक रोजगार तत्परता कार्यक्रम (जीजेआरपी) के आशय पत्र (एलओआई) आदान-प्रदान समारोह में भाग लिया। यह कार्यक्रम भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) और ऑस्ट्रेलिया की डीकिन यूनिवर्सिटी के सहयोग से विकसित किया गया।ऑस्ट्रेलियाई उच्चायोग एवं डीकिन यूनिवर्सिटी के प्रतिनिधियों ने ग्लोबल जॉब रेडीनेस प्रोग्राम की पहल को भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच शैक्षणिक सहयोग को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बताया। इस अवसर पर साउथ एशिया ग्लोबल एंगेजमेंट की वाइस प्रेजिडेंट एवं सीईओ रवनीत पाहवा, मिनिस्टर कौन्सेल्लोर (एजुकेशन एंड रिसर्च) जॉर्ज थियोस, डाकिन यूनिवर्सिटी पार्टनरशिप के डिप्टी वाईस चांसलर डॉ. डेविड हॉलिवेल के बीच सहयोग के महत्व पर जोर दिया। डॉ. विशाल जैन ने कहा कि उद्योग और शिक्षण संस्थानों के बीच सहयोग विद्यार्थियों को व्यावहारिक कौशल प्रदान करने, उन्हें वैश्विक रोजगार की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह पहल जीआईईटी के विद्यार्थियों के कौशल विकास, आत्मविश्वास और करियर की संभावनाओं को नई दिशा प्रदान करेगी।



नीति, दक्ष सांगवान और वैभव शर्मा रहे अव्वल

गोहाना। शहर में गुढ़ा मार्ग स्थित जेएलएन वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में किड्स विंग में कक्षा प्रथम से कक्षा 5वीं तक के विद्यार्थियों के लिए (ऑब्जेक्ट डिस्क्रिप्शन कंपटीशन) अंग्रेजी भाषा में वस्तु-विवरण प्रतियोगिता आयोजित की गई। मार्गदर्शन विद्यालय की प्रबंधक कृष्णा शर्मा का रहा। संयुक्त अध्यक्षता एमडी एडवोकेट सुनील शर्मा और प्राचार्य डॉ. सचिन शर्मा ने की। प्रतियोगिता में विद्यार्थियों द्वारा अपने-अपने ग्रुप के अनुसार भिन्न-भिन्न वस्तुओं के विवरण में अपनी योग्यता तथा भाषा शैली की कुशलता का परिचय देते हुए विशेष वस्तुओं के प्रकार, लाभ-हानि एवं उपयोगिता के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किए। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान के लिए विजेता विद्यार्थियों में क्रमशः कक्षा प्रथम से मनप्रीत, शौर्य, नव्या व विकुल, कक्षा द्वितीय से कियाना, नैंसी हुड्डा व यशस्वी, कक्षा तृतीय से नीति, विधि व नव्या, कक्षा चतुर्थ से वैभव शर्मा, नीतिका व आराध्या कक्षा पंचम से दक्ष, शगुन व निकिता विजेता रहे। संयोजन उप प्राचार्य सूरत शर्मा का रहा। निर्णायक मंडल में को-ऑर्डिनेटर रितु भारद्वाज, नीलम वर्मा व ज्योति रानी शामिल रहे।



राज्यस्तरीय अट्या-पट्या चैंपियनशिप में प्रताप स्कूल बना चैम्पियन

खरखौदा। रोहतक में आयोजित राज्य स्तरीय अट्या-पट्या चैंपियनशिप में प्रताप सिंह मेमोरियल सीनियर सेकेंडरी स्कूल, खरखौदा की अंडर-17 टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। जबकि अंडर-14 टीम ने दूसरा स्थान हासिल कर रजत पदक जीता। विजेता खिलाड़ियों के विद्यालय पहुंचने पर प्रबंधन समिति, प्राचार्या दया दहिया, एकेडमिक डायरेक्टर डॉ. सुबोध दहिया कोच सुरेन्द्र राठी ने स्वागत किया गया। प्राचार्य दया दहिया ने बताया कि प्रताप स्कूल में शिक्षा के साथ-साथ खेलों को भी विशेष महत्व दिया जाता है। अंडर-17 टीम के खिलाड़ियों में मोनिक, दीपांशु, तरुण, नितिक, पुष्प, लक्ष्य, पूर्व, आर्यन और योगेश शामिल रहे। वहीं, अंडर-14 टीम में रिहान, अंशु, चिराग, उज्ज्वल, गुरमीत, कार्तिक, अनुज, अनमोल, देव राठी, मिंटू, भव्या, आशीष, कुणाल, देवव्रत और हर्षित ने शानदार प्रदर्शन करते हुए रजत पदक हासिल किया।

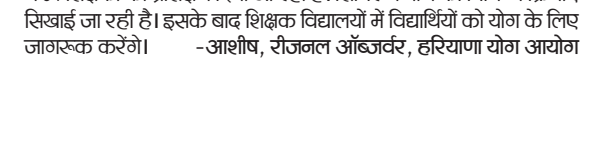

मेयर राजीव जैन ने स्वयंसेवकों व सफाई कर्मियों के साथ चलाया सफाई अभियान

स्वच्छ, स्वस्थ और सुंदर सोनीपत के लिए 53वें सप्ताह चला सफाई अभियान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत



सोनीपत शहर में अभियान के दौरान सफाई करते मेयर राजीव जैन व स्वयंसेवक।

शहर को स्वच्छ, स्वस्थ और सुंदर बनाने के संकल्प के साथ शनिवार को स्वच्छ, स्वस्थ और सुंदर सोनीपत अभियान के 53वें सप्ताह सफाई अभियान चलाया गया। ज्योतिबा फुले चौक सब्जी मंडी से हनुमान नगर तक सफाई की गई। नगर निगम मेयर राजीव जैन ने स्वयंसेवकों व सफाई कर्मियों के साथ अभियान में शामिल होकर सफाई व्यवस्था को संभाला। सफाई कर्मचारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। अभियान के दौरान मेयर राजीव जैन को दो स्थानों पर सीवर के ढक्कन टूटे हुए मिले। उन्होंने मौके पर ही संबंधित अधिकारियों को फोन कर जल्द बदलवाने के निर्देश दिए, ताकि किसी भी प्रकार की दुर्घटना से बचा जा सके। उन्होंने कहा कि शहर की सफाई के साथ नागरिकों की सुरक्षा भी नगर निगम की प्राथमिकता है। सार्वजनिक स्थानों पर टूटी हुई सड़कों, सीवर ढक्कनों और अन्य समस्याओं का समय पर समाधान किया जाना जरूरी है। उन्होंने दुकानदारों से अपील की, कि वह दुकानों का कूड़ा सड़क पर या खुले में न डालें, बल्कि कूड़ा उठाने वाली गाड़ी में ही डालें। बाजारों और सड़कों को साफ रखना प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है।

ये मौजूद रहे

इस दौरान पूर्व पार्षद हरिप्रकाश सैनी, शैलेंद्र तोमर, विक्की, नकीन मेहरा, प्रवेश आंतिल, मुकेश, नफे, जगदीश, प्रवीन, जयभगवान सैनी, सफाई दरोगा कृष्ण, सीएसआई सतपाल सैनी मौजूद रहे।

विद्यार्थियों तक योग का ज्ञान पहुंचाने को 64 शारीरिक शिक्षक प्रशिक्षण लेकर सीख रहे गुर

सोनीपत। सरकार की ओर से योग को लगातार बढ़ावा दिया जा रहा है। विद्यालयों में योग से विद्यार्थियों की एकाग्रता बढ़ती है और तनाव कम करने में मदद मिलती है। नियमित योग से शारीरिक स्वास्थ्य बेहतर होता है, शरीर में लचीलापन आता है और बच्चों में अनुशासन व सकारात्मक सोच विकसित होती है। इसी उद्देश्य के साथ जिले के प्रत्येक राजकीय विद्यालय में विद्यार्थियों को योगाभ्यास करवाया जाएगा। विद्यार्थियों के लिए योग की राह प्रशस्त करने के लिए हरियाणा योग आयोग, शिक्षा विभाग हरियाणा एवं पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार की ओर से विद्यालयों में तैनात शारीरिक शिक्षकों को प्रशिक्षण देकर योग के गुर सिखाएं जा रहे हैं। योजना को अमलीजामा पहनाने के लिए बीसवांमील स्थित जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट) में शारीरिक शिक्षकों के लिए 30 दिवसीय योग शिक्षक प्रशिक्षण शिविर लगाया गया है। प्रत्येक विद्यालय तक योग को पहुंचाने के लिए राजकीय विद्यालयों में तैनात शारीरिक शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। शिविर में 64 शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। शिविर का प्रथम चरण 4 नवंबर तक चलेगा। प्रशिक्षण लेने के बाद शिक्षक अपने विद्यालयों के विद्यार्थियों को योग करवाते नजर आएंगे। विभाग का मानना है कि निपुण बनाने के साथ योग विद्यार्थियों की याददाश्त, आत्मविश्वास और भावनात्मक संतुलन बनाए रखने में भी सहायक हो सकता है।

64 शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जा रहा

विद्यालयों में विद्यार्थियों को बेहतर ढंग से योग सिखाने के लिए शारीरिक शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। 30 दिनों के शिविर के दौरान प्रथम चरण में 64 शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। शिविर में योग की विभिन्न क्रियाएं सिखाई जा रही है। इसके बाद शिक्षक विद्यालयों में विद्यार्थियों को योग के लिए जागरूक करेंगे। **-आशीष, रीजनल ऑब्जर्वर, हरियाणा योग आयोग**

खबर संक्षेप

पुलिस ने प्रशासन के साथ हटवाया अतिक्रमण

गोहाना। पुलिस आयुक्त सोनीपत ममता सिंह के मार्गदर्शन एवं पुलिस उपायुक्त गोहाना विक्रांत भूषण के निर्देशन में शनिवार को सोनीपत पुलिस ने प्रशासनिक अधिकारियों के साथ मिलकर शहर में अवैध अतिक्रमण हटाने के लिए अभियान चलाया।

विभाग की टीम ने खाद्य पदार्थों के लिए सैंपल

गोहाना। खाद्य पदार्थों में मिलावट की आशंका को देखते हुए खाद्य सुरक्षा विभाग की टीम कार्रवाई कर रही है। शुक्रवार को तीन दुकानों से छह सैंपल लेने के बाद टीम ने शनिवार को भी अभियान जारी रखा। शनिवार को भी टीम ने तीन दुकानों से 14 सैंपल लिए।

जिले में देर रात 1 बजे बहाल हुई बिजली आपूर्ति

सोनीपत। बिजली कर्मचारियों की हड़ताल के चलते शहरी क्षेत्र व ग्रामीण अंचल में प्रभावित हुई बिजली आपूर्ति रात करीब 1 बजे पूरी तरह बहाल हो सकी। हड़ताल के चलते 21 अक्तूबर की रात 10 बजे के बाद बिजली गुल होने से शहर के लोगों की परेशानी बढ़ गई थी।

मिल का नवीनीकरण और जल्द पेराई सत्र शुरू कराने की मांग

शुगर मिल पर किसानों का धरना, 28 तक अल्टीमेटम

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

मांगें नहीं मानीं जाने पर सहकारिता मंत्री की कोठी के घेराव की दी चेतावनी



सोनीपत के कामी रोड स्थित सहकारी शुगर मिल के बाहर धरने पर बैठे जिला प्रधान वीरेंद्र पहल व किसान।

कामी रोड स्थित सहकारी शुगर मिल के नवीनीकरण, जल्द पेराई शुरू कराने और अन्य समस्याओं के समाधान की मांग को लेकर गन्ना किसानों ने शनिवार को मिल के गेट पर भारतीय किसान यूनियन (टिकैत) के बैनर तले अनिश्चितकालीन धरना शुरू किया। किसानों ने प्रदर्शन करते हुए सरकार को 28 अक्टूबर तक मांगें पूरी करने का अल्टीमेटम दिया। किसानों ने कहा कि यदि उनकी मांगें जल्द नहीं मानी गईं, तो सहकारिता मंत्री डॉ. अरविंद शर्मा की कोठी का घेराव किया जाएगा।

जिला प्रधान वीरेंद पहल ने बताया कि किसान कई महीने से चीनी मिल के नवीनीकरण के लिए टेंडर करवाने व अन्य समस्याओं के समाधान के लिए प्रशासन के माध्यम से मुख्यमंत्री और सहकारिता मंत्री के नाम ज्ञापन दे रहे हैं, लेकिन उनकी सुनवाई नहीं हो रही। इससे नाराज किसानों को 21 सितंबर व 23 अक्तूबर को सैकड़ों ट्रैक्टरों के साथ सड़कों पर उतरकर प्रदर्शन करना पड़ा। किसानों ने कहा कि इन प्रदर्शनों में डीजल पर लाखों रुपये खर्च हुए, लेकिन सरकार ने फिर भी उनकी मांगों पर ध्यान नहीं दिया।

फसल की कटाई के बाद धरना होगा मजबूत

धरने के पहले दिन किसानों ने बताया कि फिलहाल खेतों में धान की कटाई चल रही है, इसलिए किसानों से अपील की गई है कि वह पहले फसल की कटाई पूरी करें। इसके बाद धरने को मजबूत किया जाएगा। किसानों का कहना है कि सरकार की ओर से मांगों पर ठोस कार्रवाई नहीं होने के कारण आंदोलन लंबा चल सकता है। भारतीय किसान यूनियन ने सरकार से चीनी मिल की सभी समस्याओं का जल्द समाधान करने और पेराई सत्र शुरू कराने की मांग की। धरने पर जिला उपाध्यक्ष विजेंद्र मलिक, जिला महामंत्री सतपाल, जिला महासचिव सुंदर सिंह, महावीर, मंजीत, अशोक व विजेंद्र आंतिल सहित काफी किसान मौजूद रहे।

शरद पूर्णिमा पर आज गुरुकुल जुआं में बंटेगी औषधियुक्त खीर

- दमा, नजला और श्वास संबंधी रोगियों को मिलेगा निशुल्क प्रसाद
- इच्छुक रोगियों को पूरा दिन भूखे रहकर केवल गर्म पानी का करना होगा सेवन, आने से पूर्व देनी होगी जानकारी : आचार्य वेदनिष्ठ

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

आश्विन माह की पूर्णिमा तिथि को मनाई जाने वाली शरद पूर्णिमा का महत्व साल की सभी 12 पूर्णिमा तिथियों में सबसे खास होता है। शरद पूर्णिमा के उपलक्ष्य में गांव जुआं स्थित गुरुकुल में 25 अक्तूबर रविवार को विभिन्न बीमारियों से ग्रस्त रोगियों को औषधियुक्त खीर का सेवन करवाया जाएगा। औषधयुक्त खीर के प्रसाद का वितरण शाम 6 बजे किया जाएगा। इच्छुक रोगियों को औषधयुक्त खीर के लिए पूरा दिन भूखे रहना अनिवार्य रहेगा। हालांकि वह केवल गर्म पानी का सेवन कर सकते हैं। आचार्य वेदनिष्ठ ने बताया कि शरद पूर्णिमा पर 25 अक्तूबर रविवार को गुरुकुल, जुआं में औषधयुक्त खीर तैयार करवाकर वितरण किया जाएगा। उन्होंने बताया कि दमा, नजला, जुखाम, छींक आना, नाक बंद रहना, श्वास संबंधी एलर्जी जैसे रोगों से संबंधित रोगियों को औषधियुक्त खीर का निशुल्क सेवन करवाया जाएगा। औषधियुक्त खीर का सेवन करने के इच्छुक रोगी इसके सेवन से पहले अन्न आदि ग्रहण न करें। वह केवल पूरा दिन गर्म पानी का सेवन ही करें। उन्होंने बताया कि इच्छुक लोगों को गुरुकुल में 6 बजे पहुंचना होगा और अपने साथ कांसे का बर्तन लाना होगा। उन्हें गुरुकुल में आने से पहले इसकी सूचना भी देनी होगी। आचार्य वेदनिष्ठ ने बताया कि मान्यता है कि औषधियुक्त खीर के प्रसाद का सेवन करने से मनुष्य निरोग रहता है। उन्हें पेट संबंधी रोग, जलन, त्वचा संबंधी बीमारियां व पित्त से जुड़ी समस्याओं से निजात मिलती है।

हिंदी से नमिता और भूगोल से कुंजल चुनी गई मिस फ्रेशर



खरखौदा। सावित्री बाई फुले राजकीय कन्या महाविद्यालय, खरखौदा में प्राचार्य प्रोफेसर अनिल कुमार के निर्देशन और डॉ योगिता की अध्यक्षता में हिंदी एवं भूगोल विभाग के संयुक्त तत्वावधान में नवागंतुक छात्राओं के स्वागत हेतु फ्रेशर पार्टी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन कर किया गया। कार्यक्रम में वरिष्ठ छात्राओं द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ - समूह नृत्य, गीत, प्रस्तुत की गईं। नवागंतुक छात्राओं ने भी अपना परिचय एवं प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें एम.ए. हिंदी से छात्रा नमिता को मिस फ्रेशर और एम.ए. भूगोल से छात्रा कुंजल को मिस फ्रेशर चुना गया।

न्यूज डायरी

गांव धनाना की बेटी नेहा ढुल बनी लेफ्टिनेंट





गोहाना। कहते हैं कि मेहनत करने वालों की कभी हार नहीं होती। गांव धनाना की बेटी नेहा ढुल पुत्री स्व. सुनील ढुल ने सेना में लेफ्टिनेंट बनकर इस कहावत को चरितार्थ करते हुए अपने व अपने परिवार के सपने को साकार किया है। उनकी इस उपलब्धि से गांव में खुशी का माहौल है। इस खुशी में शनिवार को नेहा के दादा चांद राम ढुल ने ग्रामीणों के साथ लड्डू बांटे। इस खुशी में नेहा ढुल के दादा चांद राम, राजेन्द्र ढुल, गोपीराम, दलबीर ढुल, ताऊ रिजकराम, पालूराम, अनिल, मां मंजीत देवी, ताई बबली, मौसी मुकेश, सतीश ढुल, महेंद्र, डॉ. रणबीर, कृष्ण ढुल, प्रदीप उर्फ पोपल, अनूप सिंह, दलबीर जाटायन, डॉ. सतीश, धर्मबीर जाटायन, प्रदीप राठी, नरेश राठी, नवीन ढुल व पालाराम सहित अन्य ग्रामीणों ने लड्डू बांटकर खुशी मनाई।

योगासन स्पर्धा में 29 विद्यार्थी रहे द्वितीय



गन्नौर। जिला स्तरीय योगासन चैंपियनशिप में चाइल्ड केयर इंटरनेशनल स्कूल के विद्यार्थियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए स्कूल के 29 विद्यार्थियों ने बेहतरीन प्रदर्शन के दम पर दूसरा स्थान हासिल किया। प्रतियोगिता में स्कूल के विद्यार्थियों ने विभिन्न योगासन स्पर्धाओं में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। सीनम, परीक्षित, युग, गीत और मयंक सहित कई विद्यार्थियों ने स्वर्ण पदक जीतकर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। वहीं नविता, सुशांत, गीतिका, यश, रिधि, वीर और माणिक सहित अन्य विद्यार्थियों ने रजत पदक हासिल किए। इसके अलावा आयुष, वंश, अंकुश, शिवांक, मानिक, आदित्य और जस ने कांस्य पदक जीतकर विद्यालय की उपलब्धियों में इजाफा किया। विद्यालय के प्रबंधक अजय यादव ने सभी पदक विजेता विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उनका उत्साहवर्धन किया। उन्होंने कहा कि खेल और योग विद्यार्थियों के शारीरिक तथा मानसिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को भविष्य में भी इसी तरह मेहनत करने और नई उपलब्धियां हासिल करने के लिए प्रेरित किया।

दहिया खाप का एक प्रधान बनाए जाने को लेकर दिसंबर में होगी पंचायत



खरखौदा। दहिया खाप की एक पंचायत शनिवार को गांव सिसाना स्थित खाप के चबूतरे पर हुई। जिसमें दहिया खाप के दो प्रधानों की एक जगह एक प्रधान बनाए जाने पर विचार विनिमय किया गया। मौजूदा दो प्रधानों सुरेन्द्र बाणिया व जयपाल दहिया में से केवल सुरेन्द्र बाणिया पंचायत में पहुंचे। ज्ञातव्य है कि पंचायत संबंधी सूचना को न केवल सोशल मीडिया पर प्रचारित किया गया था, बल्कि सिसाना की दोनों ग्राम पंचायतों में मुनादी कराई गई थी। इसके बावजूद जयपाल दहिया पंचायत में नहीं पहुंचे। जबकि दोनों सरपंच पंचायत में शामिल हुए। गौरतलब है कि इस महीने के शुरू में हुए धर्मार्थ गऊशाला सिसाना के वार्षिकोत्सव के मंच से यह मांग उठी थी कि दहिया खाप का जो सामाजिक रुतबा रहा है उसे देखते हुए अच्छा हो कि दो की बजाय एक प्रधान हो। उल्लेखित प्रक्रिया को अपनाने के लिए दिसंबर माह में पुनः पंचायत होगी, जो संभवतः 6 तारीख को होगी। प्रस्तावित पंचायत की सूचना और आमंत्रण देने का जिम्मा दोनों पंचायत प्रमुखों का रहेगा। इस अवसर पर सरपंच जग्गी, सुरेश प्रधान, पूर्व पुलिस अधीक्षक अनूप दहिया, सुधीर, मेहर सिंह, दीपक, विकास सहित अनेक गणमान्य उपस्थित रहे।

150 ग्रामीणों ने करवाई स्वास्थ्य जांच

- भगत फूल सिंह महिला विवि में कैंसर जागरूकता एवं निःशुल्क जांच शिविर लगाया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गोहाना



गोहाना। कुलपति प्रो. सुदेश के साथ राजीव गांधी कैंसर इंस्टीट्यूट एंड रिसर्च सेंटर, नई दिल्ली के चिकित्सक, विवि के प्राध्यापक एवं समाज कार्य विभाग की छात्राएं।

भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय (विवि) के समाज कार्य विभाग एवं एमएसएम इंस्टीट्यूट ऑफ आयुर्वेद द्वारा राजीव गांधी कैंसर इंस्टीट्यूट एंड रिसर्च सेंटर, नई दिल्ली के सहयोग से एक दिवसीय कैंसर जागरूकता एवं निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित किया गया।

विवि की कुलपति प्रो. सुदेश ने कहा कि कैंसर से लडऩे के लिए जनभागीदारी और जन-जागरूकता अत्यंत आवश्यक हैं। महिला विवि स्वास्थ्य एवं सामाजिक सरोकारों से जुड़ी गतिविधियों के माध्यम से ग्रामीण समुदायों के कल्याण और जनभागीदारी को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयासरत है। शिविर में राजीव गांधी कैंसर इंस्टीट्यूट एंड रिसर्च सेंटर, नई दिल्ली से गगनदीप, डॉ. संदीप एवं डॉ. प्रांजल ने अपनी सेवाएं दी। शिविर में विवि द्वारा गोद लिए गए गांव गढ़ी उजाले खां, गामड़ी, खानपुर कलां, कसंडा एवं कसांडी के 150 से अधिक ग्रामीणों ने पैप स्मीयर टेस्ट, स्तन कैंसर, मुख एवं ईएनटी संबंधी जांच के साथ-साथ रक्तचाप व रक्त शर्करा की जांच करवाई। मार्गदर्शन समाज कार्य विभाग की अध्यक्ष डॉ. दीपाली माथुर एवं एपी नायक का रहा। इस अवसर पर प्रो. मंजू पवार, लूसी एवं फील्डवर्क समन्वयक सोहन लाल सहित विशेष रूप से उपस्थित रहे।

खेलकूद विद्यालय राई ने राष्ट्रीय रैंकिंग में हासिल किए दो स्थान



सोनीपत। मोतीलाल नेहरू खेलकूद विद्यालय, राई ने दो राष्ट्रीय रैंकिंग में स्थान हासिल कर जिले का मान बढ़ाया है। एजुकेशन वर्ल्ड इंडिया स्कूल रैंकिंग 2026-27 में विद्यालय सरकारी आवासीय स्कूलों की श्रेणी में हरियाणा में पहले और देश में चौथे स्थान पर रहा। वहीं, सीफोर की 2026 रैंकिंग में इसी श्रेणी में विद्यालय को देशभर में पहला स्थान मिला है। एजुकेशन वर्ल्ड की रैंकिंग में विद्यालय को 1500 में से 1180 अंक मिले। इसके लिए किए गए सर्वेक्षण में 18 हजार प्रतिभागियों की राय के आधार पर 4500 स्कूलों का मूल्यांकन किया गया।विद्यालय को खेल शिक्षा में 100 में से 88 अंक, शिक्षकों की योग्यता में 200 में से 168 और शैक्षणिक प्रतिष्ठा में 100 में से 86 अंक मिले। सुरक्षा एवं स्वच्छता में 84 और पाठ्यक्रम और शिक्षण पद्धति में 80 अंक दर्ज किए गए। प्राचार्य एवं निदेशक दिनेश कुमारी ने इस उपलब्धि का श्रेय शिक्षकों, खेल प्रशिक्षकों, गैर-शिक्षण कर्मचारियों व विद्यालय परिवार के प्रयासों को दिया। उन्होंने हरियाणा खेल विश्वविद्यालय के कुलपति अशोक कुमार के मार्गदर्शन और सहयोग के लिए भी आभार जताया।

गांव कैलाशपुर में प्रशासनिक कार्रवाई का विरोध



सोनीपत। गांव कैलाशपुर में किसान की जमीन पर खड़ी फसल और पेड़ काटने की प्रशासनिक कार्रवाई के विरोध में जिला पार्षद संजय बड़वासनी और निगम पार्षद प्रतिनिधि मोनू ने किसानों के साथ विरोध दर्ज जताया। उन्होंने कहा कि किसान सोमवार को पशुओं और परिवार के सदस्यों के साथ उपायुक्त कार्यालय पहुंचकर प्रदर्शन करेंगे। किसान परिवार सहित धरने पर भी बैठेंगे।

नई अनाज मंडी में 18 लाख रुपये से होगा शेड का सुदृढ़ीकरण

गन्नौर। नई अनाज मंडी के शेड का 18 लाख रुपये की लागत से सुदृढ़ीकरण किया जाएगा। इसके तहत शेड की क्षतिग्रस्त चादरों को बदलने के साथ मरम्मत का काम कराया जाएगा। इसके लिए एस्टीमेट तैयार कर लिया गया है और जल्द ही टेंडर प्रक्रिया शुरू कर काम करवाया जाएगा। शहर की नई अनाज मंडी में एकमात्र शेड है और उसक पर लगी लोहे की चादरें खराब हो चुकी हैं। इसके कारण बरसात के दौरान पानी टपकता है और शेड के नीचे रखी फसलें भीगने से नुकसान होने की आशंका बनी रहती है। ऐसे में शेड की मरम्मत और सुदृढ़ीकरण जरूरी है। इस समस्या को देखते हुए शेड की खराब चादरों को बदलने की योजना बनाई गई है। शेड की मरम्मत और सुदृढ़ीकरण पर करीब 18 लाख रुपये खर्च किए जाएंगे। इसके लिए एस्टीमेट तैयार कर लिया गया है। शेड की चादरें बदलने और मरम्मत होने से बरसात के दौरान किसानों की फसल को भीगने से बचाने में मदद मिलेगी।

मेधावियों ने अंग्रेजी भाषण स्पर्धा में किया उत्कृष्ट प्रदर्शन



गोहाना। गोहाना-जींद मार्ग स्थित ओम पब्लिक स्कूल में शनिवार को अंतर विद्यालय अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई। एडवोकेट ओपी लाठर की स्मृति में आयोजित इस प्रतियोगिता में विभिन्न विद्यालयों की 25 टीमों ने प्रतिभागिता करके प्रतिभा की झलक दिखाई। विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर खूब तालियां बटोरीं। मुख्य अतिथि महर्षि वाल्मीकि विवि कैथल के कुलपति प्रो. राजेन्द्र कुमार अनायत थे। निर्माण मंडल में गैलेक्सी कोचिंग पवाइंट प्रा.लि. के संस्थापक डॉ. कुलदीप कटारिया, सोफिया कॉनवेन्ट स्कूल मुरथल से लक्ष्मी व स्वर्णप्रस्थ पब्लिक स्कूल सोनीपत में अंग्रेजी विभाग की एचओडी नादिया खान ने विद्यार्थियों की प्रतिभा परखी। समय प्रबंधक दिनेश कुमार थे। अध्यक्षता स्कूल की निदेशक निर्मल लाठर ने की जबकि संयोजन प्राचार्य डॉ. मनजीत खासा का रहा। मंच संचालन उप प्राचार्या रेखा बजाज ने किया। प्रतियोगिता में इंडियन मार्डन पब्लिक स्कूल सोनीपत से दीप्ती व आदित्य की टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस स्कूल के आदित्य को श्रेष्ठ वक्ता घोषित किया गया। मेजबान ओपीएस से पूर्वा और श्रेया की टीम व जानकीदास पब्लिक स्कूल सोनीपत से शरद अरोड़ा व सोनोरियस दहिया की टीम संयुक्त रूप से द्वितीय जबकि श्रीजी इंटरनेशनल स्कूल सोनीपत से विवान त्यागी व शौर्य की टीम तृतीय स्थान पर रही। द्रोणाचार्य वमावि की छात्रा वाणी यादव स्पीकर ने विद ए डिफरेंस व गेटवे इंटरनेशनल स्कूल सोनीपत से कियारा चोपड़ा स्पीकर विद ए डिफरेंस ने क्रमशः प्रथम व द्वितीय पुरस्कार जीता।

शिवा शिक्षा सदन के शिवियंस लक्षित और लक्ष्य ने जोनल राउंड में लहराया परचम

- अपनी रचनात्मक सोच, तार्किक क्षमता और तकनीकी दक्षता का दिया शानदार परिचय

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत



सोनीपत। शिवा शिक्षा सदन में प्रबंधन व स्टाफ सदस्यों के साथ शिवियंस लक्षित और लक्ष्य वर्मा।

शिवा शिक्षा सदन के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों लक्षित और लक्ष्य वर्मा ने प्रतिष्ठित क्रिएटिविटी लीग 2026 के जोनल राउंड में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए आईआईटी, दिल्ली में आयोजित होने वाले फिनाले के लिए क्वालीफाई कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया है। 24 अक्तूबर को स्वर्णप्रस्थ पब्लिक स्कूल में आयोजित इस प्रतियोगिता में हरियाणा एवं पंजाब के करीब 40 विद्यालयों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। कड़ी प्रतिस्पर्धा के बीच दोनों शिवियंस ने अपनी रचनात्मक सोच, तार्किक क्षमता और तकनीकी दक्षता का शानदार परिचय देते हुए फिनाले में अपनी जगह सुनिश्चित की। उनकी यह उपलब्धि विद्यार्थियों की मेहनत, शिक्षकों के कुशल मार्गदर्शन तथा विद्यालय की नवाचार-आधारित शिक्षा व्यवस्था का प्रमाण है। स्कूल प्रबंधन ने बताया कि शिवा शिक्षा सदन में विद्यार्थियों को भविष्य की तकनीकी चुनौतियों के लिए तैयार करने के लिए आधुनिक संसाधनों और अनुभवात्मक शिक्षण को विशेष महत्व दिया जाता है। विद्यालय अत्याधुनिक ह्यूमनॉइड रोबोट्स तथा डेनमार्क और नीदरलैंड जैसे देशों से संबंधित उन्नत तकनीकी संसाधनों के माध्यम से विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और नवाचार की भावना विकसित करने के लिए प्रयासरत है। विद्यालय का रोबोटिक्स क्लब उन्नत मॉड्यूलर रोबोटिक्स किट्स से सुसज्जित है, जिनकी सहायता से विद्यार्थी केवल मॉडल निर्माण तक सीमित न रहकर वास्तविक प्रोग्रामिंग, तार्किक चिंतन और समस्या-समाधान जैसे व्यावहारिक कौशलों का विकास करते हैं। साथ ही, हार्वर्ड विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों से जुड़ने के अवसर विद्यार्थियों को वैश्विक शैक्षणिक अनुभव प्रदान करते हैं।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि कार्यालय, बीएसएनएल के सामने, पुल के साथ, सोनीपत
फोन : 8295154800, 9653530209, 9253681005, 9253681010

FIMS HOSPITAL
'Nurturing Life'
Department of Respiratory, Pulmonary & Sleep Medicine
छाती व फेफड़े रोग सम्बंधित सभी बिमारियों का इलाज व जाँच जैसे :-
◇ टी.बी., दमा, पुरानी खाँसी व खाँस्ते हुए खून आना।
◇ COPD & ब्रोंकाइटिस (Bronchitis) व वायुस्फीति (Emphysema).
◇ निमोनिया (Pneumonia) फेफड़ों का इनफेक्शन, रेस्पिरेटरी फेलियर (ARDS) व कोरोना वायरस (Covid 19) का ईलाज।
◇ फेफड़ों के कैंसर की जांच व ईलाज।
◇ साँस की नली से फेफड़ों की दूरबीन द्वारा जाँच (Bronchoscopy).
◇ फेफड़ों के साँस लेने की क्षमता की जाँच (PFT).
◇ सोते समय साँस रूकना (Obstructive Sleep Apnea) व स्लीप स्टडी (Sleep Study)
◇ तम्बाकू छोड़ने में मदद, सलाह व जागरूकता (Tobacco Quitting Programme).
(Scan the QR code to learn more)
Dr. Mandeep Singh
MBBS, MD, DNB, FNB(Critical Care), IFCCM, IDCCM, EDIC
OPD :- Mon to Sat 11AM - 2PM
फिम्स अस्पताल
बहालगढ़–सोनीपत रोड, सोनीपत, हरियाणा–131001
www.fimssonipat.com | 0130-2205000 | Follow us:
"On panel of CGHS, Haryana Govt., ESIC, ECHS, Delhi Gov, Railway, NDMC, DJB, FCI, MCD, AAI, DTL, DTC, TPDDL, Raksha, Star, and all Major Insurance Companies, TPAs, & PSUs."

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
P-1
रोहतक,रविवार 25 अक्टूबर 2026

इन दिनों हर तरफ एलन मस्क की टेस्ला रोडस्टर कार को लेकर रॉकेट तकनीक और उड़ने की क्षमताओं से जुड़ी चर्चाएं हो रही हैं। रोडस्टर की प्रस्तावित उत्पादन समय सीमा 2028 बताई गई है। उड़ती हुई कारें निश्चित रूप से भविष्य के परिवहन का एक हिस्सा बन सकती हैं। लेकिन अभी इसे हकीकत बनने में कई सवालों और चुनौतियों का सामना करना होगा।

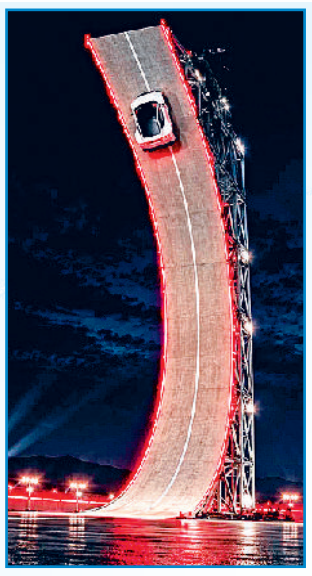



क्या सच होने वाला है उड़ती कार का सपना !

{ कवर स्टोरी / लोकमित्र गौतम }

उड़ती हुई कारों का सपना अब केवल विज्ञान कथाओं, हॉलीवुड फिल्मों और भविष्य की कल्पनाओं तक सीमित नहीं है। गुजरे 15 अक्टूबर 2026 को टेक्सास में टेस्ला की ऐसी ही उड़न कार नई रोडस्टर के प्रदर्शन ने इस अनुमान को और मजबूत किया है। एलन मस्क की टेस्ला के अलावा भी दुनिया की कई कंपनियां ऐसी कारों के विकास में काफी हद तक सफल हो चुकी हैं या इसके नजदीक पहुंच चुकी हैं, जो सड़क पर कार की तरह चलने के बजाय हवा में उड़ सकेंगी। कहीं इन्हें फ्लाइंग कार कहा जा रहा है, कहीं इलेक्ट्रिक वर्टिकल टेकऑफ एंड लैंडिंग यानी ईवीटीओएल और कहीं एयर टैक्सी। लेकिन एक बुनियादी सवाल अब भी रह-रहकर जेहन में आ रहा है कि क्या हम सचमुच उड़ती हुई कारों के युग की दहलीज पर खड़े हैं या तकनीक की चमक ने भविष्य की तस्वीर को वास्तविकता से कहीं ज्यादा आकर्षक बना दिया है? इस बात को समझना होगा कि सड़क पर चलने वाली कार, रॉकेट से जुड़ा प्रदर्शन और यात्रियों को लेकर उड़ने वाला प्रमाणित विमान- तीनों अलग-अलग चीजें हैं। भविष्य की परिवहन क्रांति को समझने के लिए इस अंतर को ध्यान में रखना जरूरी है।



कई देशों में बन रही ईवीटीओएल



नीदरलैंड में निर्मित पाल-वी लिबर्टी कार

आसान नहीं सपने का सच होना

बीते 15 अक्टूबर 2026 को एलन मस्क ने स्पेसएक्स की तकनीक से जुड़े थ्रस्टरों की मदद से अमेरिका के टेक्सास में अपनी बहुचर्चित और बहुप्रतीक्षित टेस्ला की नई रोडस्टर कार को एक घुमावदार रैंप से हवा में उछलते, पलटते और जमीन पर उतरते दिखाया और अपनी सपनीली उड़न कार को लेकर असाधारण दावे भी किए हैं। इसके बाद से उड़न कार की चर्चाएं एक बार फिर से सुर्खियों में आ गई हैं। लेकिन उड़ान के जानकारों के मुताबिक इस प्रदर्शन को सामान्य अर्थों में उड़ने वाली कार का प्रमाण नहीं माना जा सकता। कुछ क्षण हवा में उछलना और नियंत्रित उड़ान भरकर यात्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाना बिल्कुल अलग बात है। हालांकि इस घटना का महत्व फिर भी कम नहीं है। इसने एक बार फिर दिखाया कि सड़क परिवहन और एयरोस्पेस तकनीक के बीच की दूरी घटाने की महत्वाकांक्षा कितनी बड़ी हो चुकी है। मगर भविष्य की असली परीक्षा रोमांचक प्रदर्शन नहीं बल्कि सुरक्षा, उपयोगिता, लागत और नियामकीय मंजूरी होगी। साथ ही इसकी जोर-शोर से हो रही तैयारियों के बीच यह सवाल भी वाजिब है कि क्या हर कार को उड़ने की जरूरत होगी?

वास्तविकता को समझना होगा

फ्लाइंग कार से जुड़े सवालों का जवाब समझने के लिए पहले इसकी दो अलग अवधारणाओं को समझना होगा। पहली यह कि ऐसी कार, जो सड़क पर भी चल सके और जरूरत पड़ने पर उड़ भी सके। दूसरी है इलेक्ट्रिक एयर टैक्सी, जो सड़क पर चलने वाली कार नहीं बल्कि छोटी उड़ने वाली कार या मशीन है। इसे ही आमतौर पर ईवीटीओएल कहा जाता है यानी टैक्सी के रूप में एक विमान, जो बिजली से उड़ता हो और हेलीकॉप्टर की तरह सीधे ऊपर उठ सके और नीचे उतर सकता हो।

यह दूसरी अवधारणा फिलहाल ज्यादा व्यावहारिक दिखाई देती है। शहरों के बीच हर व्यक्ति की निजी उड़ने वाली कार की तुलना में हवाई अड्डे से शहर के केंद्र तक तेज परिवहन, महानगरों में सीमित दूरी की हवाई टैक्सी और आपातकालीन चिकित्सा सेवाएं पहले उपयोगी साबित हो सकती हैं। इससे जमीन पर मौजूद सड़क नेटवर्क को हटाने के बजाय उसके ऊपर एक नया परिवहन विकल्प तैयार होगा। हमें यह समझना होगा कि महानगरों में यातायात की समस्या केवल सड़कों की कमी नहीं है। आबादी का घनत्व, गलत शहरी नियोजन, पार्किंग, सार्वजनिक परिवहन की अपर्याप्तता और यात्रा की बढ़ती मांग भी इसके कारण हैं। ऐसे में उड़ती हुई कारों को हर समस्या का समाधान मानना जल्दबाजी होगी। कल्पना करें दिल्ली, मुंबई या बंगलुरु में हजारों निजी उड़ने वाली कारें एक साथ आसमान में उतर आएं, तब सवाल होगा कि उन्हें उड़ने की अनुमति कौन देगा, उनके लिए हवाई गलियारे कैसे निर्धारित होंगे, दुर्घटना की स्थिति में जिम्मेदारी किसकी होगी और वे कहां उतरेंगी? यदि हर इमारत की छत पर लैंडिंग की व्यवस्था करनी पड़े, तो शहरी ढांचे को पूरी तरह बदलना होगा। इसके अलावा, बैटरी की क्षमता, उड़ान की दूरी, मौसम का प्रभाव, शोर, रखरखाव और यात्रियों की सुरक्षा भी बड़ी चुनौतियां हैं। कम दूरी की इलेक्ट्रिक उड़ान संभव बनाने वाली तकनीक अपने आप में यह गारंटी नहीं देती कि वह हर मौसम में सुरक्षित और किफायती सेवा दे सकेगी।



अमरिका में बनी जॉबी एविएशन का एस4

खत्म नहीं होंगे पारंपरिक वाहन

उड़न कारों के बारे में सोचते हुए एक यह सवाल भी जेहन में आता है कि क्या उड़ने वाली कारों के आने के बाद रेल, मेट्रो, बसें और सामान्य कारें अप्रासंगिक हो जाएंगी? इसकी संभावना बिल्कुल नहीं है, क्योंकि इतिहास गवाह है कि परिवहन के इतिहास में नए साधन पुराने साधनों को पूरी तरह समाप्त नहीं करते बल्कि उनकी भूमिका बदलते हैं। विमान आने के बाद रेल खत्म नहीं हुई, मेट्रो के विस्तार से बसों की जरूरत समाप्त नहीं हुई। उसी तरह उड़ने वाली कारें भी पहले उन यात्राओं में जगह बना सकती हैं, जहां समय की कीमत अधिक है और यात्रियों की संख्या सीमित है। मेट्रो और रेल बड़ी संख्या में यात्रियों को कम ऊर्जा और कम जगह में ले जाने में सक्षम हैं। बसें स्थानीय संपर्क प्रदान करती हैं, जबकि निजी कारें घर से गंतव्य तक लचीली यात्रा का विकल्प देती हैं।

भविष्य में ऐसा हो सकता है

एक यात्री घर से इलेक्ट्रिक कार में मेट्रो स्टेशन तक पहुंचे, लंबी दूरी ट्रेन से तय करें और अंतिम चरण में हवाई टैक्सी का इस्तेमाल करे, ऐसी एकीकृत व्यवस्था अधिक यथार्थवादी है। इस तरह उड़ती हुई कारों का भविष्य केवल इस बात से तय नहीं होगा कि कोई वाहन हवा में उठ सकता है या नहीं। असली प्रश्न यह होगा कि क्या वह आम आदमी की जरूरतों के अनुकूल सुरक्षित, विश्वसनीय, किफायती और पर्यावरण की दृष्टि से बेहतर विकल्प बन सकता है। हालांकि, उस भविष्य में सबसे महत्वपूर्ण वाहन शायद वह नहीं होगा जो सबसे ऊंचा उड़ता है बल्कि वह होगा जो लोगों को सबसे सुरक्षित, सुलभ और कम खर्च में उनकी मंजिल तक पहुंचाता है। *



कई देशों में हो रहे प्रयास

भले आज अमेरिका, चीन, जापान, जर्मनी, ब्रिटेन और नीदरलैंड सहित कई देशों में अलग-अलग तरह के उड़ने वाले वाहन विकसित हो रहे हों। अमेरिका में जॉबी एविएशन का एस4 और आर्चर एविएशन का मिडनाइट जैसे विमान हवाई टैक्सी के लिए तैयार किए जा रहे हैं। चीन की ईहैंग अपने ईएच216-एस जैसे बिना पायलट वाले यात्री विमान के कारण उल्लेखनीय बढ़त रखती है। जापान की स्काईड्राइव और चीन की एक्सपेंग एरॉएचटी सड़क और आसमान के बीच संबंध बनाने वाली अलग अवधारणाओं पर काम कर रही हैं। मगर यहां एक महत्वपूर्ण अंतर है। तकनीकी प्रोटोटाइप उड़ाना, विमान का नियामकीय प्रमाणन प्राप्त करना और नियमित व्यावसायिक यात्री सेवा शुरू करना तीन अलग-अलग पड़ाव हैं। चीन का ईएच216-एस प्रमाणन और सीमित सेवाओं के मामले में आगे है, जबकि अमेरिका में जॉबी जैसे खिलाड़ी पायलट वाले विमानों के प्रमाणन की दिशा में तेजी से बढ़ रहे हैं। इसलिए किसी एक देश को सभी तरह की उड़ने वाली कारों का निर्विवाद विजेता कहना अभी सही नहीं होगा।

अब रोबोट करेंगे सर्जरी !

अभी तक इंसानी डॉक्टर की मदद से रोबोटिक सर्जरी हुआ करती थी। लेकिन अब इंसानी डॉक्टर से दूर रहकर रोबोटिक सर्जरी को अंजाम देने की दिशा में कदम आगे बढ़ गए हैं। यह देखना दिलचस्प होगा, आने वाले समय में मेडिकल साइंस में रोबोट की भूमिका और कितनी बढ़ती है?

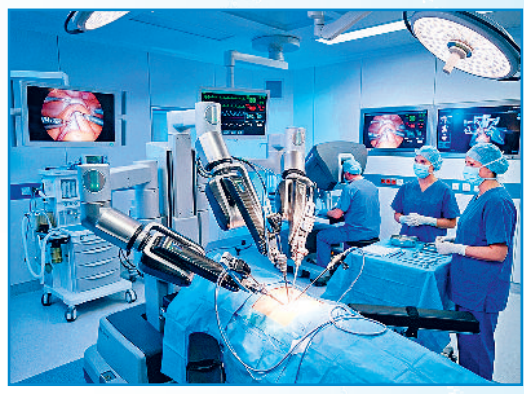

{ टेक्नोट्रीटमेंट / वीरेंद्र बहादुर सिंह }

मेडिकल क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और रोबोटिक्स का इस्तेमाल तेजी से बढ़ रहा है। आज भारत में भी घुटने और कूल्हे के जॉइंट रिप्लेसमेंट से लेकर कई तरह की छोटी-बड़ी सर्जरी रोबोटिक तकनीक की मदद से की जाने लगी हैं। हालांकि इन ऑपरेशनों में रोबोट अपने आप सर्जरी नहीं करता। अनुभवी और कुशल डॉक्टर ऑपरेशन थिएटर में मौजूद रहते हैं और रोबोटिक उपकरणों की मदद से पूरी प्रक्रिया को नियंत्रित करते हैं। लेकिन अमेरिका में हाल ही में हुए एक प्रयोग ने भविष्य की मेडिकल सर्जरी की संभावनाओं को एक कदम और आगे बढ़ा दिया है।

दो ह्यूमनॉइड रोबोट ने की सर्जरी: अमेरिका की यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया में एक ऐसा प्रयोग किया गया, जिसमें दो ह्यूमनॉइड रोबोट ने एक जीवित मरीज पर सर्जरी की। इस दौरान गॉल-ब्लैडर यानी पित्ताशय को शरीर से अलग किया गया। ऑपरेशन में चीरा लगाना, लिवर से पित्ताशय को अलग करना और अंत में टांके लगाने जैसी प्रक्रियाएं रोबोट ने पूरी कीं।

यह दावा सुनने में बेहद रोमांचक है कि रोबोट ने स्वयं ऑपरेशन कर दिया, लेकिन इस प्रयोग की वास्तविकता को समझना जरूरी है। पहली बात यह कि मरीज इंसान नहीं, बल्कि एक पशु था। दूसरी और सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि प्रशिक्षित मानव डॉक्टर पूरी प्रक्रिया के दौरान मौजूद थे। वे ऑपरेशन थिएटर से दूर बैठकर टेली ऑपरेशन तकनीक के माध्यम से रोबोट को नियंत्रित कर रहे थे। फिर भी मेडिकल साइंस के लिए यह प्रयोग बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसका उद्देश्य यह पता लगाना था कि क्या भविष्य में ह्यूमनॉइड रोबोट डॉक्टर की प्रत्यक्ष मौजूदगी के बिना भी जटिल सर्जरी कर सकते हैं?

नॉर्मल रोबोट ने किया ऑपरेशन: इस प्रयोग की एक और खासियत थी। इसके लिए कोई विशेष सर्जिकल रोबोट तैयार नहीं किया गया था। इसके बजाय दो नॉर्मल ह्यूमनॉइड रोबोट का इस्तेमाल किया गया। इन रोबोट में कई तरह के जोड़ थे और उनके हाथों में अंगूठे तथा अंगुलियों जैसी कार्यक्षमता थी। इसलिए वे अपने हाथों में अलग-अलग सर्जिकल उपकरण पकड़कर उनका इस्तेमाल कर सकते थे। इनमें श्रीडी लाइडार और डेप्थ कैमरा जैसी तकनीक भी लगी थी। इससे रोबोट अपने सामने मौजूद वस्तुओं की स्थिति और गहराई को समझ सकते थे। यही क्षमता सर्जरी जैसे अत्यंत संवेदनशील काम में महत्वपूर्ण हो जाती है। यह प्रयोग इस बात का संकेत है कि भविष्य की सर्जरी में केवल रोबोटिक मशीनें ही नहीं, बल्कि एआई, कंप्यूटर विजन और रोबोटिक्स का संयुक्त इस्तेमाल निर्णायक भूमिका निभा सकता है।

भारत में हो चुका है ऐसा प्रयोग: रोबोटिक सर्जरी की यह कहानी भारत के लिए पूरी तरह नई नहीं है। करीब आठ वर्ष पहले गुजरात में ऐसा प्रयोग हो चुका है, जिसमें डॉक्टर ने मरीज से कई किलोमीटर दूर बैठकर टेलीरोबोटिक तकनीक से सफलतापूर्वक हृदय की सर्जिकल प्रक्रिया की थी।

पद्मश्री से सम्मानित हृदय रोग विशेषज्ञ डा. तेजस पटेल ने 2018 में अहमदाबाद स्थित अस्पताल में भर्ती एक महिला मरीज के हृदय की प्रक्रिया को दूर बैठकर नियंत्रित किया था। उस समय डॉक्टर स्वयं अस्पताल से लगभग 30-32 किलोमीटर दूर गांधीनगर में थे। मरीज को कुछ दिन पहले ही हृदयाघात हुआ था। इसके बावजूद उसने दुनिया में इस तरह की पहली प्रक्रियाओं में से एक के लिए सहमति दी। यह प्रयोग इसलिए ऐतिहासिक था क्योंकि डॉक्टर और मरीज के बीच कई किलोमीटर की दूरी होने के बावजूद रोबोटिक सिस्टम और हाईस्पीड इंटरनेट की मदद से डॉक्टर मरीज की प्रक्रिया को नियंत्रित कर सके।



कैसे होती है टेलीरोबोटिक सर्जरी: इस तरह की रोबोटिक प्रणाली मुख्य रूप से तीन हिस्सों में काम करती है। पहला हिस्सा अस्पताल के ऑपरेशन थिएटर में मौजूद रोबोटिक आर्म होता है, जो कैथलैब जैसी व्यवस्था के साथ जुड़ा रहता है और मरीज के शरीर में वास्तविक प्रक्रिया करता है। दूसरे हिस्से में एक बदली जा सकने वाली कैसेट होती है। इसमें प्रक्रिया के लिए जरूरी क्लिनिकल सामग्री और उपकरण व्यवस्थित रहते हैं। तीसरा हिस्सा डॉक्टर के लिए बनी कॉकपिट जैसी व्यवस्था होती है। डॉक्टर इसमें बैठकर गेमिंग के जॉयस्टिक जैसे नियंत्रण उपकरणों की मदद से रोबोटिक आर्म को संचालित करता है।

सबसे खास बात यह है कि यह कॉकपिट, ऑपरेशन थिएटर से काफी दूर भी हो सकती है।

सवाल भी है बरकरार: रोबोटिक सर्जरी को लेकर अकसर यह सवाल उठता है कि क्या भविष्य में रोबोट, डॉक्टरों की जगह ले लेंगे? फिलहाल ऐसा कहना जल्दबाजी होगी। सर्जरी केवल हाथों की सटीक गतिविधियों का नाम नहीं है। मरीज की स्थिति को समझना, अचानक पैदा होने वाली जटिलताओं का आकलन करना, निर्णय लेना और किसी अप्रत्याशित परिस्थिति में तुरंत रणनीति बदलना, इन सबमें मानवीय विशेषज्ञता महत्वपूर्ण है।

लेकिन तस्वीर का दूसरा पहलू भी उतना ही दिलचस्प है। अगर एआई रोबोट को देखने, समझने और निर्णय लेने की क्षमता में लगातार बेहतर बनाता है और रोबोटिक तकनीक हाथों की अत्यंत सूक्ष्म गतिविधियों को अधिक सटीक बनाती है, तो डॉक्टर और रोबोट का यह गठजोड़ चिकित्सा क्षेत्र को पूरी तरह बदल सकता है। *



{ दोहे / केदार शर्मा }

पूर्ण चंद्रमा शरद का

दीप्त रजत-सी ओढ़नी, उजली पाखी रात।
पूर्ण चंद्र से शरद ऋतु, हंस-हंस करती बात।।
चटक चमक चक चांदनी, चंचल चित चकोर।
होले-होले हवा हंस, हुलराती हर ओर।।
षोडस अंशों युक्त है, मादकमय मुस्कान।
सम्मोहनमय मौन में, डूबा सकल जहान।।
कानन उपवन दमकते, नहा चांदनी संग।
नदी सरोवर बदलते, धवल वसन सम रंग।।
क्षीरसिंधु सुत क्षीर-सा, शीतलता सब ओर।
मंद-मंद मुस्कान में, मिला मधुर मन-मोर।।
पूर्ण चंद्रमा शरद का, बदले सब हालात।
कुदरत जैसे बांटती, कोई नई सौगात।।
पर्वों की आहट हुई, सर्दी की पदचाप।
उधर गुलाबी ठंड भी, बदन रही है नाप।।
बदली-बदली सी फिजां, बदल रहे हालात।
दिन की घड़ियां भी घटीं, और फैलती रात।।



{ पुस्तक अंश / सूर्यबाला }

कई प्रतिष्ठित सम्मानों से विभूषित वरिष्ठ साहित्यकार सूर्यबाला की आत्मकथात्मक संस्मरणों की पुस्तक 'डिप सा'ब की तीसरी बेटी' हाल में प्रकाशित होकर आई है। अपनी स्मृति की वीथियों से गुजरते हुए उन्होंने बहुत साधारण सी लगने वाली घटनाओं में व्याप्त असाधारण सौंदर्य और विमर्श को व्यक्त किया है। आज उनके जन्मदिन के अवसर पर प्रस्तुत है, इसी पुस्तक का एक संपादित अंश।

युवती वधुओं से एक गुहार

मनोविज्ञान कभी मेरा विषय नहीं रहा लेकिन मेरी 'मेरा विद्रोह', 'सुनंदा छोकरी की डायरी', 'सांझवाती' और 'निर्वासित' जैसी कहानियां पढ़कर लोग अकसर प्रश्न करते हैं, 'आप बच्चों और बूढ़ों के मनों को कैसे इतनी बारीकी से पढ़ पाती हैं?...तो मैं ही नहीं शायद हर रचनाकार जन्मजात मनोविज्ञानी होता है। यह मनोविज्ञान लेखन ही नहीं, जीवन में भी आई परिस्थितियों और चरित्रों से निर्वाह कर ले जाने की तरकीबें निकाल सकता है। मैंने इसी की मदद से श्वसुरालय के ग्राम्यांचल से जुड़े लोगों की मन, प्रकृति और समझ बांच ली थी। ये बेशक पुरानी और रीति-रिवाजों की लकीर पीटने वाले गलत परंपराओं, अंधविश्वासों को भी सही समझने वाले लोग हैं लेकिन मन के कुटिल नहीं। ये ऊपर से अड़ियल हैं, रूढ़ परंपराओं से अलग होने का उनमें भय व्यापता हैं, और वे असुरक्षित महसूस करते हैं लेकिन अंदर से सीधे, भोले और अपनेपन की अकूत मिल्कियत के मालिक हैं। उन्होंने जीवन में सदा अपना-पराया, तेरा-मेरा अलगा-गुजारी और थोड़ी-थोड़ी चीजों पर लड़ना, अड़ना ही देखा होता है। एक-दूसरे के खिलाफ अपने पतियों को भड़काती स्त्रियां, प्रायः हर विवाहित पुत्र, रात-दिन मां से पत्नी के विरुद्ध और पत्नी से उसकी मां के खिलाफ शिकायतों की अनवरत और अंधाधुंध कलह कोलाहल भरी शिकायतें सुनते-सुनते खब्त हो गया होता है। मुझे लेकर भी इस मां की, इस परिवार की कुछ वैसी ही रूढ़ धारणाएं बनी होंगी उसे संभालने में, उनकी धारणा बदलने में समय तो लगना ही था।

विश्व की प्रकृति प्रदत्त दुर्भाग्यपूर्ण विडंबनाओं में एक है, सास-बहू की परस्पर तनातनी वास्तव में यह एक ही 'पुरुष' पर अपना एकनिष्ठ वर्चस्व चाहने वाली उसके जीवन की दो अतिप्रिय स्त्रियों के क्लेश हैं क्योंकि वह दोनों का प्रिय है दोनों स्त्रियां उस पर अपना पूरा आधिपत्य चाहती हैं। पहली ने जिस बच्चे को जन्म दिया, शिशुपन से उसके सारे दुःख-सुख की साक्षी रही, एक ही रात में उस मां को एक-दूसरी युवती स्त्री द्वारा उसके पद से अपदस्थ कर दिया जाता है। (अनजाने ही सही) लेकिन बचपन से युवा होने तक जिसकी नींद सोयी, जिसकी नींद उठी, ऐसी मां और बेटे के निकटतम रक्त-संबंध के बावजूद, यह अपदस्थ मां, अपने 'दोनों बच्चों' (पुत्र-पुत्रवधु) से एक समझदार, सम्मानजनक व्यवहार, रिश्ता और निश्छल प्यार पा कर अति प्रसन्न और तृप्त भी हो सकती है, यह कोई युवती बहू शायद ही समझती हो। कम से कम प्रयोग के तौर पर ही, नाममात्र को ही, यदि वह पहले की तरह उस मां को घर की सम्राज्ञी, उसके बेटे की 'वही मां' बनी रहने का 'भरम' बनाये रख सके तो सीधे-सीधे सिर्फ भारत ही नहीं, विश्व की एक बड़ी मनोवैज्ञानिक समस्या छूमंतर हो सकती है। लेकिन इतना तक भी धैर्य कहां हो पाता है। न हमारी युवती वधुओं में! न परिपक्ववय वाली मां में ही प्रायः खलनायिकत्व अपनाने से बाज न आती वधुरानी को भी सीधे-सीधे, संपूर्ण प्रभुत्व, पर्याप्त स्पेस और स्वछंद स्वतंत्रता चाहिए होती है। तो लुटी-पिटी, हारी-खिसियानी हजार पूर्वाग्रहों से ग्रस्त, मां जो तमाम गलत धारणाओं की शिकार पहले से ही होती हैं, उनकी धारणा का रंग पक्का होता जाता है। मैंने इन्हीं दो गहरी खाइयों के बीच सेतुबंध का एक प्रयोग सा किया था जो सफल रहा और पूरे कुटुंब में तीन पीढ़ियों तक जीवन और संबंधों की समरसता कायम रही। सच तो यह है कि परिवार और रिश्तों से जुड़ी स्थितियों को सिर्फ 'घरेलू' मानकर न मुंह बिचकाया जा सकता है, न उन्हें टरकाया जा सकता है। थोड़े-बहुत उलटफेर के साथ कॉर्पोरेट और कारोबारी संस्थानों में जटिल रिलेशनशिप को साधने में काम आने वाली तरकीबों और फॉर्मूलों से ही इस मसले को भी हल किया जा सकता है। शर्त सिर्फ एक, इसे घरेलू समझ कर हल्के से न लिया जाए। *



(वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित पुस्तक 'डिप सा'ब की तीसरी बेटी' से साभार)

विज्ञापन...

इंजेक्शन की नवीन तकनीक से स्पाइन रोगों का उपचार

नोट : वरिष्ठ नागरिकों (60 वर्ष के ऊपर) का उपचार मात्र 12 हजार रुपए में

सर्जरी के बिना ही सिर्फ इंजेक्शन तकनीक के जरिये स्पाइन (रीढ़) रोगों का बेहतर और विश्वसनीय उपचार ग्वालियर में हो रहा है इस तकनीक के असाधारण लाभ-

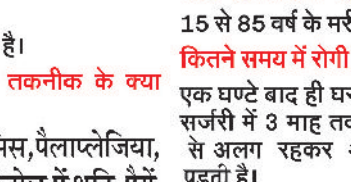

केन्द्रीय मंत्री श्रीमंत ज्योतिरादित्य सिंधिया जी से स्पाइन के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए डॉ. प्रमोद पहारिया अवार्ड प्राप्त करते हुए।

स्टेनोसिस, स्पॉन्डिलाइटिस आदि में कारगर है।

जो रोगी ऑपरेशन करवा चुके हैं उसमें भी यह कारगर है ?

यदि ऑपरेशन के बाद दबाव बना रहता या दोबारा दबाव आ जाता है तो उसमें भी यह तकनीकी कारगर है।

इस ट्रीटमेंट की कितनी बार आवश्यकता होती है?
सिर्फ एक ही बार पर्याप्त है।

सर्जरी की अपेक्षा इस तकनीक के क्या फायदे हैं?
सर्जरी के बाद पैरालिसिस, पैलाप्लेजिया, ब्लैडर एंव बोवेल के कंट्रोल में क्षति, पैरों में कमजोरी, इंफेक्शन, इंप्लाट फैलियर जैसे कॉम्पिलकेशन इसमें नही है।

किन मरीजों का इलाज इस तकनीक से संभव है?
डिस्क प्रोलेप्स जैसे L4-L5, L5-S1, साइटिका, लंबर या सर्वाइकल रेडीक्युलोपैथी, डिजरनेरेटिव डिस्क, फैसिट जॉइन्ट सिंड्रोम, माइलोपैथी, लंबर कैनाल

किस उम्र के लिये यह चिकित्सा है?
15 से 85 वर्ष के मरीजों के लिये।

कितने समय में रोगी घर जा सकता है?
एक घण्टे बाद ही घर जा सकता है। जबकि सर्जरी में 3 माह तक रोगी को अपने काम से अलग रहकर आर्थिक क्षति उठाना पड़ती है।

इस ट्रीटमेंट की सफलता की दर कितनी है?
90 से 95% सफल है।

इस ट्रीटमेंट का असर कब तक रहता है?
इसमें जड़ से इलाज होता है।

क्या यह स्टेरॉइड इंजेक्शन है?
नहीं, यह एक भ्रम है। यह एक सेफ अमेरिकन प्रोसीजर है, जो एक विशेष मशीन की निगरानी में किया जाता है।

NBC@

डॉ. प्रमोद पहारिया
स्पाइन सर्जन
MBBS, D.Ortho, DNB, M.Ch. (Ortho)
पूर्व सर्जन- सर गंगाराम हॉस्पिटल एवं इंडियन स्पाइनल इंज्यूरी सेन्टर, नई दिल्ली

ओल्ड श्री टॉकीज, बारादरी, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)
समय: दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक
व्हाट्सएप पर रिपोर्ट भेजकर ही संपर्क करें
सम्पर्क – 7354858466



चित्तौड़गढ़ मीरा महोत्सव-2026

शौर्य की फिजा में महकती भक्ति

इतिहास में राजपूताना वीरगाथाओं से समृद्ध प्रदेश राजस्थान के चित्तौड़गढ़ में आज और कल आयोजित हो रहे मीरा महोत्सव में भक्ति की बयार की अनुभूति आप कर सकते हैं। यह महोत्सव न केवल राजस्थान के इतिहास बल्कि वहां की कला, संगीत, संस्कृति से रूबरू होने का अवसर भी प्रदान करती है। इस महोत्सव की विशिष्टताओं पर एक नजर।

सांस्कृतिक आयोजन
वीना गौतम

कुछ जगहें ऐसी होती हैं, जहां घूमने का अर्थ केवल खूबसूरत इमारतों को देखना, तस्वीरें खींचना और रास्ते में स्थानीय व्यंजनों का स्वाद लेना भर नहीं होता। वहां की मिट्टी, हवा और पत्थर भी कोई कहानी सुनाते हैं। राजस्थान का चित्तौड़गढ़ ऐसी ही जगह है। यहां दुर्ग की ऊंची प्राचीरें शौर्य और बलिदान की गाथाएं कहती हैं, विजय स्तंभ इतिहास की विराटता का अहसास कराता है और इन्हीं ऐतिहासिक दीवारों के बीच स्थित मीरा मंदिर प्रेम, समर्पण और आत्मिक स्वतंत्रता की एक बिल्कुल अलग दुनिया में ले जाता है। आज 25 और कल 26 अक्टूबर 2026 को आयोजित हो रहा मीरा महोत्सव ऐसा ही एक खास अवसर है।

संगीत-परंपरा की अनुभूति : राजस्थान पर्यटन के अनुसार इस दो दिवसीय आयोजन में मीरा की भक्ति, कविता, संगीत और राजस्थान की लोकपरंपराओं को केंद्र में रखा जाएगा। ऐसे में यह सफर केवल एक ऐतिहासिक शहर की सैर नहीं बल्कि उस प्रेम स्वरूपा महाभक्त मीरा को समझने का अवसर भी है, जिसने राजमहलों की मर्यादाओं के बीच अपने मन की स्वतंत्रता और कृष्ण के प्रति अपनी अनन्य भक्ति को चुना।

बहती है मीरा की भक्ति धारा: चित्तौड़गढ़ का नाम आते ही रानी पद्मिनी, महाराणा कुंभा, महाराणा सांगा और राजपूताना के शौर्य की स्मृतियां सामने आ जाती हैं। लेकिन इस शहर की सांस्कृतिक पहचान का एक दूसरा पक्ष भी है, जो तलवार की चमक से नहीं, वीणा की धुन और भक्ति के स्वर से उजागर होता है। मीरा इसी पक्ष की प्रतिनिधि हैं। सोलहवीं सदी की भक्त-कवयित्री मीराबाई का जीवन कृष्ण के प्रति उनकी अनन्य आस्था और सामाजिक रूढ़ियों से टकराने के लिए याद किया जाता है। उनके पदों में प्रेम है, विरह है, प्रतीक्षा है और अपने आराध्य के प्रति ऐसा समर्पण है, जो किसी एक काल या क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा। उनकी कविता मंदिरों से निकलकर लोकगीतों, शास्त्रीय संगीत, भजन मंडलियों और आम लोगों की स्मृतियों में पहुंची। मीरा महोत्सव के दौरान भक्ति संगीत, काव्य और लोककलाओं के कार्यक्रम इस विरासत को नए सिरे से महसूस करने का अवसर देंगे।



पद्मिनी महल से गौमुख कुंड

ऐतिहासिक मीरा दुर्ग का दीदार: चित्तौड़गढ़ की यात्रा का सबसे प्रभावशाली पड़ाव है इसका विशाल दुर्ग। लगभग 180 मीटर ऊंची पहाड़ी पर स्थित यह ऐतिहासिक परिसर दूर से ही अपने विस्तार और भव्यता से आकर्षित करता है। इसकी लंबी चढ़ाई, प्रवेशद्वार और भीतर फैले स्मारक, आगंतुकों को धीरे-धीरे उस दौर में ले जाते हैं, जब मेवाड़ की राजनीतिक और सांस्कृतिक पहचान इसी दुर्ग से आकार लेती थी। इसकी प्राचीरों पर खड़े होकर आस-पास के भू-भाग को देखना अपने आपमें एक अनुभव है। यहां इतिहास किसी बंद संग्रहालय में रखी वस्तु की तरह नहीं बल्कि खुले आकाश के नीचे फैले परिदृश्य की तरह सामने आता है। समय ने कई इमारतों को क्षतिग्रस्त किया, लेकिन उनके अवशेष आज भी सत्ता, संघर्ष, कला और स्मृति की परतें खोलते हैं। विजय स्तंभ इसकी पहचान का प्रमुख हिस्सा है। इसकी बारीकियों को देखते हुए समझ आता है कि मध्यकालीन भारत में स्मारक केवल विजय का प्रतीक नहीं बल्कि शिल्पकला और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के माध्यम भी थे।

आकर्षक मीरा मंदिर: इसी दुर्ग के भीतर मीरा मंदिर पहुंचकर यात्रा का स्वर बदल जाता है। यहां राजसी वैभव और युद्धों की



मीरा मंदिर

स्मृतियों के बीच भक्ति की एक शांत दुनिया दिखाई देती है। मंदिर की स्थापत्य शैली, नक्काशी और परिसर का वातावरण पर्यटकों को कुछ देर ठहरने के लिए बाध्य करता है। यहां पहुंचकर मीरा के पदों को याद करना इस यात्रा को और अर्थपूर्ण बना सकता है। उनके काव्य में कृष्ण केवल आराध्य नहीं, बल्कि आत्मीय संवाद के साथी हैं। मीरा का प्रेम किसी सांसारिक उपलब्धि की आकांक्षा नहीं रखता, वह अपने विश्वास के साथ जीने की स्वतंत्रता का भी प्रतीक है। यही कारण है कि सदियों बाद भी उनकी कविता अलग-अलग भाषाओं और पीढ़ियों के लोगों को छूती है। मीरा मंदिर में कुछ समय शांत बैठकर आसपास के स्थापत्य को देखकर कल्पना कर सकते हैं कि कैसे किसी कवयित्री की निजी अनुभूति धीरे-धीरे सामूहिक सांस्कृतिक विरासत बन जाती है। पर्यटन का असली आनंद शायद इसी बिंदु पर मिलता है, जब कोई जगह केवल देखने की वस्तु नहीं रहती, बल्कि भीतर कुछ बदलने का अवसर बन जाती है।

ये स्थल भी हैं दर्शनीय: जब आप मीरा महोत्सव में शामिल होने के लिए चित्तौड़गढ़ जाएं तो यहां स्थित कई और स्थलों को देख सकते हैं। रानी पद्मिनी का महल, राणा कुंभा का महल, गौमुख कुंड और कालिका माता मंदिर जैसे स्थल, इतिहास तथा स्थापत्य के अलग-अलग रूप सामने लाते हैं। पद्मिनी महल का परिसर और उसके आस-पास का जलाशय दुर्ग के दृश्यात्मक आकर्षण को बढ़ाते हैं, जबकि राणा कुंभा का महल, मेवाड़ की राजसी विरासत को समझने का अवसर देता है। गौमुख कुंड पर पहुंचकर कुछ देर ठहरना अविस्मरणीय अनुभव हो सकता है। चट्टान से निकलकर कुंड में पहुंचते जलस्रोत का दृश्य प्रकृति और आस्था के पुराने संबंध की याद दिलाता है। दुर्ग के भीतर जैन मंदिर भी हैं, जिनकी बारीक नक्काशी और स्थापत्य विविधता इस क्षेत्र की बहुधार्मिक सांस्कृतिक विरासत का परिचय देती है। *

इसे भी करें एंज्वॉय

चित्तौड़गढ़ की यात्रा में राजस्थानी खान-पान का स्वाद भी शामिल होना चाहिए। दाल-बाटी-चूरमा, गट्टे की सब्जी और स्थानीय शैली में तैयार पारंपरिक व्यंजन भोजन को यात्रा का यादगार हिस्सा बना सकते हैं। स्थानीय बाजारों में हस्तशिल्प, पारंपरिक कपड़े और क्षेत्रीय कलाकृतियां देखी, खरीदी जा सकती हैं।

बेहतर और सफल जीवन जीने के लिए सबको बदलने के बजाय खुद को समझिए और जरूरी बदलाव कीजिए। इससे आप मनचाही सफलता तो पाएंगे ही, जीवन में सार्थकता भी आएगी।

दुनिया को नहीं खुद को बदलिए

सेल्फ मोटिवेशन
शिखर चंद जैन



अधिकतर लोग अकसर इसलिए परेशान रहते हैं कि ये दुनिया वैसी क्यों नहीं है, जैसी वे चाहते हैं? सच कहा जाए तो उनकी परेशानी का मूल ही यही सोच है। सुकून, समृद्धि और सफलता के लिए असल में जरूरत होती है खुद को बदलने की।

व्यर्थ न करें मानसिक ऊर्जा: दूसरों को बदलने की कोशिश में अपनी ऊर्जा बर्बाद मत कीजिए। हमारे तनाव का बड़ा हिस्सा अकसर उन चीजों से आता है, जो हमारे नियंत्रण में हैं ही नहीं। कोई हमारे बारे में क्या सोचता है, किसने हमें फोन नहीं किया, किसी ने हमारी बात क्यों नहीं मानी या किसी ने हमारे साथ वैसा व्यवहार क्यों नहीं किया जैसा हम चाहते थे? इन सवालों में मानसिक ऊर्जा खपती है। 'लेट देम' थ्योरी इसी प्रवृत्ति से बाहर निकलने का एक सरल तरीका है। किसी के व्यवहार से परेशान हों तो तुरंत प्रतिक्रिया देने के बजाय खुद से पूछें, 'क्या यह मेरे नियंत्रण में है?' यदि जवाब 'नहीं' है तो अपनी ऊर्जा बचाइए।

समझें समय का सही उपयोग: समय बचाने से पहले यह तय कीजिए कि समय किसके लिए चाहिए? आज समय प्रबंधन पर हजारों तकनीकें उपलब्ध हैं, लेकिन हमारी टू-डू लिस्ट फिर भी खत्म नहीं होती। याद रखिए, हमारे पास हर काम करने के लिए अनंत समय नहीं है, इसलिए हर अवसर स्वीकार करना और हर काम पूरा करना संभव नहीं। इसका सीधा अर्थ है, प्राथमिकताएं तय करनी होंगी। जिस काम के लिए समय नहीं है, उसे 'नहीं' कहना भी समय प्रबंधन है।



लोगों की परवाह छोड़िए: 'लोग क्या कहेंगे' जैसे डायलॉग को जिंदगी का कंट्रोलर मत बनने दीजिए। समाज की राय जरूरी हो सकती है, लेकिन यदि हर निर्णय इसी डर से लिया जाए कि दूसरे क्या सोचेंगे तो धीरे-धीरे अपनी पसंद, पहचान और इच्छा दबने लगती है। आपका काम, आदतें, स्वभाव हर व्यक्ति को पसंद आना संभव भी नहीं, जरूरी भी नहीं। यदि हर टिप्पणी आपके फैसले बदलने लगे तो जीवन आपका होकर भी आपका नहीं रहेगा। दूसरों का सम्मान कीजिए, पर अपनी जिंदगी का नियंत्रण उनके हाथ में मत दीजिए।

दिमाग पर हावी न हो मोबाइल: आधुनिक जीवन की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि जो उपकरण हमें दुनिया से जोड़ने के लिए बना था, वही हमारा ध्यान सबसे ज्यादा भंग कर रहा है। हर कुछ मिनट में फोन देखना, रील बदलना, नोटिफिकेशन जांचना और बिना उद्देश्य स्क्रॉल करना एक आदत सी बन गई है। समाधान तकनीक को त्यागना नहीं, बल्कि उसकी सीमा तय करना है। सुबह उठते ही फोन न देखना, भोजन के समय उसे दूर रखना और सोने से पहले कुछ समय स्क्रीन-मुक्त रखना छोटे लेकिन प्रभावी कदम हो सकते हैं। डिजिटल अनुशासन आज की नई जीवनशैली का अनिवार्य हिस्सा है।

रिश्तों में बातचीत जरूरी: हमारी कई पारिवारिक और व्यक्तिगत समस्याएं वास्तविक घटना से ज्यादा उसके बारे में बनाए गए अनुमान से पैदा होती हैं। किसी ने देर से जवाब दिया तो हमने मान लिया कि वह नाराज है। किसी ने कम बात की तो मान लिया कि रिश्ता खराब हो गया। इसके बजाय सीधे संवाद करना बेहतर है। आरोप लगाने के बजाय सवाल पूछिए, प्रतिक्रिया देने से पहले सामने वाले की बात सुनिए। रिश्तों में हर बात पर सहमत होना जरूरी नहीं, लेकिन असहमति के बीच सम्मान बचा रहना जरूरी है। अच्छा रिश्ता वह नहीं, जिसमें कभी झगड़ा न हो, अच्छा रिश्ता वह है, जिसमें झगड़े के बाद बातचीत का दरवाजा बंद न हो।

मुझसे नहीं होगा सोचना ठीक नहीं: कई क्षमताएं अभ्यास और सीखने से विकसित हो सकती हैं। उम्र, पिछली असफलता या पुरानी पहचान को भविष्य की अंतिम सीमा मान लेना जरूरी नहीं। जिसने कभी मंच पर भाषण नहीं दिया, वह अभ्यास से वक्ता बन सकता है। जिसने कभी नहीं लिखा, वह लिखना सीख सकता है। जिसने तकनीक से दूरी बनाई है, वह धीरे-धीरे डिजिटल कौशल हासिल कर सकता है।

व्यस्त नहीं एकाग्र रहें: एक साथ कई काम करने की हमारी आदत वास्तव में कई बार सारे कामों की गुणवत्ता कम कर देती है। लगातार आने वाले संदेश, ई-मेल और नोटिफिकेशन दिमाग को एक काम से दूसरे काम की ओर खींचते रहते हैं। इसलिए रोज कुछ समय एक महत्वपूर्ण काम के लिए बिना व्यवधान के निर्धारित करना उपयोगी है। तीस मिनट के कंसंट्रेशन टास्क से शुरुआत कीजिए। मोबाइल दूर रखिए, अनावश्यक नोटिफिकेशन बंद कीजिए। *

प्रिकॉशन
शैलेंद्र सिंह

इन दिनों यंगस्टर्स में ईयरफोन से म्यूजिक सुनने की हैबिट बहुत तेजी से बढ़ रही है। लेकिन असावधानी बरतने पर इससे सुनने की क्षमता प्रभावित हो सकती है। विश्व श्रवण दिवस (27 अक्टूबर) पर जानिए उपयोगी बातें।

हार्मफुल हो सकती है ईयरफोन की दीवानगी





बस-मेट्रो में सफर करता युवा, अपनी गाड़ी में बैठकर ऑफिस जा रहा प्रोफेशनल हो, सड़क पर पैदल चलता किशोर, जिम में पसीना बहाता यंगस्टर या रात को बिस्तर पर लेटा विद्यार्थी, इन सबके बीच इन दिनों जो हैबिट तेजी से पॉपुलर हुई है, वह है- कानों में ईयरफोन लगाए रहना। म्यूजिक, पॉडकॉस्ट, वीडियो और ऑनलाइन बातचीत की दुनिया अब इतनी निजी हो गई है कि आस-पास की आवाजें कई बार हमारे लिए गैर जरूरी हो जाती हैं। लेकिन इस निजी दुनिया का एक खतरा भी है। जिस पर हम अकसर तब तक ध्यान नहीं देते, जब तक सुनाई देने वाली आवाजें धीमी नहीं पड़ने लगतीं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की चेतावनी: डब्ल्यूएचओ के मुताबिक दुनिया भर में 12 से 35 वर्ष के 1 अरब से ज्यादा युवाओं को मनोरंजन के दौरान तेज आवाज के असुरक्षित संपर्क के कारण सुनने की क्षमता प्रभावित होने का खतरा रहता है। इसमें व्यक्तिगत ऑडियो, उपकरणों पर तेज आवाज में संगीत सुनना और मनोरंजन स्थलों पर अधिक शोर शामिल है।

स्मार्टफोन और म्यूजिक: पहले संगीत सुनने के लिए हम रेडियो, टेप रिकॉर्डर या म्यूजिक सिस्टम का सहारा लेते थे। लेकिन अब कुछ सेकेंड में ही हम अपने मनपसंद गाने सुन सकते हैं। यह सुविधा उपलब्ध कराई है, हमारी जेब में मौजूद रहने वाले स्मार्टफोन ने। यात्रा के दौरान, पढ़ाई करते समय, व्यायाम के वक्त और कई बार सोने से पहले तक हमारे विशेषकर युवाओं के कानों में ईयरफोन लगे रहते हैं। जिन कोशिकाओं की मदद से ध्वनि के संकेत हमारे मस्तिष्क तक पहुंचते हैं, वे कोशिकाएं लगातार डिजिटल संगीत के संपर्क में रहने के कारण क्षतिग्रस्त होने लगती है। इससे सुनने की क्षमता प्रभावित होने लगती है।

खतरा केवल तीव्रता में नहीं: जोखिम तय करने में तीन बातें अहम है- आवाज कितनी तेज है, वह कितनी देर तक सुनी जा रही है और ऐसा कितनी बार होता है। डब्ल्यूएचओ के मुताबिक श्रवण संबंधी सुरक्षित दिशा-निर्देशों के तहत औसतन 80 डेसिबल की ध्वनि के संपर्क में एक सप्ताह में 40 घंटे तक रहने से वयस्कों के लिए संदर्भित सुरक्षित सीमा मानी जाती है। यदि आवाज का स्तर 90 डेसिबल हो जाए, तो यह अवधि घटकर सप्ताह में केवल 4 घंटे रह जाती है। इसका मतलब है कि यांत्रिक आवाज थोड़ी भी बढ़ जाए तो कान की सुरक्षा प्रणाली असुरक्षित हो जाती है।

संगीत सुनिए लेकिन: संगीत जरूर सुनिए, लेकिन संगीत हमेशा सुनने की शक्ति बचाकर सुनिए। आवाज कम रखिए, चार-चार घंटे तक लगातार संगीत ही नहीं किसी भी वॉयस को सुनने से बचिए। हर आधे या एक घंटे बाद कानों को आराम दीजिए। आखिरकार संगीत जिंदगी को खूबसूरत बनाने का जरिया है, लेकिन इससे अपनी जिंदगी में सुनने की शक्ति को खत्म करके बदसूरत न बनाएं। *



'कभी खुशी कभी गम' का 'बोले चूड़ियां' गीत दृश्य



फिल्म 'बागबान' का इमोशनल सीन



'हम दिल दे चुके सनम' का 'चांद छुपा' गीत दृश्य

सिने ट्रेंड
मनोज प्रकाश

हिंदी फिल्मों में दांपत्य प्रेम को अलग-अलग तरह से प्रस्तुत किया जाता रहा है। कई ऐसे गीत रचे गए हैं, जो आज भी करवा चौथ जैसे पर्व पर जरूर गाए-गुनगुनाए जाते हैं। ऐसी ही कुछ फिल्मों और दांपत्य प्रेम पर केंद्रित गीतों पर एक नजर।

फिल्मी गीतों में खूब दमकता रहा है दांपत्य प्रेम

पारिवारिक, धार्मिक ही नहीं हर तरह की हिंदी फिल्मों में पति-पत्नी के रिश्ते को बहुत महत्व दिया जाता रहा है। खासतौर पर दांपत्य जीवन खुशहाल बनाने के लिए पत्नी के द्वारा किए जाने वाले त्याग और समर्पण को भी फिल्मों में अलग-अलग नजरिए से फिल्माया जाता रहा है। पत्नी के द्वारा अपने सुहाग यानी पति के लिए व्रत की बात आती है तो बॉलीवुड में इस पर भी केंद्रित कुछ फिल्मी दृश्य और एक से बढ़कर सुंदर गीत रचे गए हैं।

यादगार हैं ये गीत: पति-पत्नी के प्रेम को समर्पित करवा चौथ के गीतों की बात करें तो 65 वर्ष पहले बनी फिल्म 'बहू-बेटी' का एक गीत सबसे पहले याद आता है। माला सिन्हा, अशोक कुमार, जॉय मुखर्जी और मुमताज स्टारर इस फिल्म में आशा भोंसले के गाए गीत 'आज है करवा चौथ सखी री, मांग ले सुख दान' को आज भी याद किया जाता है। इसमें करवा चौथ के पर्व को जिस तरह से उत्सव जैसा दिखाया गया, वह बाद की फिल्मों के लिए नजीर बना। इसके बाद भी कुछ फिल्मों में करवा चौथ से जुड़े गीत या कहानी पर आधारित दृश्यों ने पति के प्रति पत्नी के प्रेम, निष्ठा, समर्पण, त्याग और सम्मान को प्रभावी तरीके से पेश किया जाता रहा है।

वर्ष 1969 में रिलीज हुई फिल्म 'सुहागरात' का गीत 'गंगा मैया में जब तक पानी रहे, मेरे सजना तेरी जिंदगानी रहे', भी दांपत्य प्रेम को बहुत खूबसूरती से प्रकट करता है। इसी तरह वर्ष 1973 में रिलीज हुई फिल्म 'सौदागर' में फूल बानो (पद्मा खन्ना) अपने पति मोती (अमिताभ बच्चन) के लिए जब 'सजना है मुझे सजना के लिए...' गाती हैं तो एक सजी-धजी पत्नी का चेहरा सामने आ जाता है, जो अपने पति को खुशी देने के लिए सजती-संवरती है। भले इसे करवा चौथ से सीधा जोड़ा नहीं जाए पर यह हर करवा चौथ पर उन गीतों में शामिल होता है, जो इस दिन जरूर गाए-गुनगुनाए जाते हैं।

कुछ इसी तरह का एक गाना फिल्म 'गीत गाता चल' का है, जो 51 वर्ष पहले आई थी। 'मैं वही, दर्पण वही, न जाने ये क्या हो गया कि सब कुछ लागे नया-नया..' में सारिका-सचिन की जोड़ी एकदम से भारतीयता में रची-बसी नजर आती है। पूरी तरह लगता है कि दांपत्य प्रेम को समर्पित है यह गीत।

ये फिल्में भी हैं यादगार: करवा चौथ को पूरी तरह से समर्पित फिल्म 'करवा चौथ' 1978 में रामलाल हंस ने बनाई थी, जो इस पर्व के लिए पहली फिल्म मानी जाती है। आशीष कुमार, कामिनी कौशल, आद्या, पद्म चव्हाण, रमेश देव और हेलन ने इसमें अभिनय किया था। उषा मंगेशकर के गाए गीत 'करवा चौथ का व्रत ऐसा', इस मूवी का मुख्य गीत था। इसमें हेलन ने अपनी सखियों के साथ पारंपरिक तौर तरीके से करवा चौथ को सेलिब्रेट किया।



'करवाचौथ का व्रत ऐसा' गीत मे हेलन

करवा चौथ पर दांपत्य प्रेम को प्रभावी तरीके से प्रेजेंट करने वाली दो और फिल्मों का जिक्र किया जा सकता है। ये हैं- 'मांग भरो सजना' और 'सुहागरात'। सन 1980 में जब 'मांग भरो सजना' में पति का दो पत्नियों के बीच में संतुलन बनाने का प्रयास करना, उस दौर में महिलाओं के बीच सर्वाधिक चर्चा का विषय बन गया था। रेखा और मौसमी चटर्जी के किरदारों ने इसमें जीतेंद्र के लिए व्रत रखकर पूरे समर्पण के साथ इस गीत के फिल्मांकन को प्रस्तुत किया है। आशा भोसले तथा लता मंगेशकर की आवाज में गाया यह गीत, 'दीपक मेरे सुहाग का जलता रहे...' आज भी करवा चौथ के अवसर पर विवाहित महिलाएं सुनना पसंद करती हैं।

पति के साथ को समर्पित भावुक गीत: फिल्म 'सुहागरात' का गीत, 'गंगा मैया में जब तक पानी रहे, मेरे सजना तेरी जिंदगानी रहे...' पत्नी का पति के प्रति प्रेम की पराकाष्ठा को दिखाता है। उसका मन सूरज-चांद से भी नहीं भर रहा है तो वह पति की जिंदगानी के लिए उससे आगे निकल जाती है। उसे लगता है कि सूरज चांद तो छिप सकते हैं पर मां गंगा कभी नहीं सूखेंगी और वह उससे अपने पति का जीवन जोड़ देती है। दांपत्य प्रेम की पराकाष्ठा व्यक्त करता है यह गीत।

ये गीत-दृश्य भी हैं दांपत्य को समर्पित: नए दौर की फिल्मों में भी कई गीत ऐसे रचे गए, जिन्होंने दर्शकों को करवा चौथ के प्रति संवेदनशील बनाया और इस पर्व की महत्ता को नया मोड़ दिया। इनमें 'दिल वाले दुल्हनिया ले जाएंगे' का 'घर आ जा परदेसी', 'कभी खुशी कभी गम' का 'बोले चूड़ियां', 'हम दिल दे चुके सनम' का 'चांद छुपा बादल में', 'जख्म' का 'गली में आज चांद निकला' के अतिरिक्त भी कई ऐसे गीत हैं, जो भले ही करवा चौथ का आधार नहीं लेते हों पर इस दिन विवाहित महिलाएं गुनगुनाती नजर आती हैं। हां, 'राजा हिंदुस्तानी' का वह सीन भी इस दिन अवश्य याद आता है, जिसमें करिश्मा कपूर अपने पति के लिए निर्जला व्रत रखती है और एक भावनात्तक मोड़ इसका एंड करता है। ठीक वैसे ही जैसे करवा चौथ पर चांद देखने के बाद पति-पत्नी एक-दूसरे को देखते हुए ऐसे लगते हैं जैसे कह रहे हों सात जन्मों का रिश्ता है हमारा। यहां फिल्म 'बागबान' का जिक्र करना भी जरूरी है। इसमें अमिताभ का किरदार, अपनी पत्नी (हेमा मालिनी) के लिए व्रत रखता है। दोनों एक-दूसरे से दूर रहकर भी दांपत्य के अटूट प्रेम बंधन में जुड़े दिखते हैं। *

पर्व / आर. सी. शर्मा

शरद पूर्णिमा चांदनी रात में भक्ति की दिव्यता



भारतीय सनातन परंपरा में पर्व-त्योहार आत्मा को परमात्मा से जोड़ने वाले आध्यात्मिक सोपान भी होते हैं। इन्हीं पावन पर्वों में शरद पूर्णिमा का विशिष्ट स्थान है। आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को मनाया जाने वाला यह पर्व प्रकृति की अनुपम छटा, चंद्रमा की धवल चांदनी, श्रीकृष्ण की महारास लीला और मां लक्ष्मी की आराधना के कारण विशेष धार्मिक महत्व रखता है।

महारास की दिव्य रात्रि: शरद पूर्णिमा का सर्वाधिक भावपूर्ण आध्यात्मिक संदर्भ भगवान श्रीकृष्ण की महारास लीला से जुड़ा है। श्रीमद्भागवत महापुराण के दशम स्कंद में वर्णित रासपंचाध्याई भगवान के माधुर्य स्वरूप और गोपियों की अनन्य भक्ति का अद्भुत आख्यान प्रस्तुत करती है। शरद ऋतु की निर्मल रात्रि, यमुना का तट, वृंदावन की कुंज गलियां और मुरली की मधुर तान यह समूचा परिवेश भक्ति साहित्य में दिव्यता के अनुपम बिंब के रूप में प्रतिष्ठित है। भागवत परंपरा में रासलीला को लौकिक प्रेम की सीमाओं से ऊपर उठकर ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण के भाव से देखा जाता है। महारास का आध्यात्मिक मर्म यही है कि जब अहंकार, स्वार्थ और सांसारिक आसक्ति का आवरण हटता है, तब हृदय में अनन्य भक्ति का प्रकाश प्रकट होता है। इस दृष्टि से शरद पूर्णिमा केवल चंद्रदर्शन की रात्रि नहीं बल्कि कृष्णमय चेतना में निमग्न होने का पावन अवसर है। मंदिरों में ठाकुरजी का विशेष श्रृंगार, भजन-कीर्तन और रासलीला के आयोजन इसी भक्तिभाव को साकार करते हैं।

चांदनी में अमृतवर्षा: सनातन धर्म में चंद्रमा को मन का अधिष्ठाता माना गया है। वैदिक एवं पौराणिक परंपराओं में चंद्रदेव की उपासना, सोम की अवधारणा और शीतलता के प्रतीक के रूप में चंद्रमा का विशेष महत्त्व है। शरद पूर्णिमा की रात्रि में आकाश में पूर्ण चंद्रमा अपनी उज्ज्वल आभा बिखेरता है। वर्षा ऋतु के पश्चात निर्मल आकाश और स्वच्छ वातावरण इस प्राकृतिक सौंदर्य को और भी मनोहारी बना देते हैं। लोकमान्यता है कि इस रात्रि चंद्रमा की किरणों से अमृत बरसता है। इसी विश्वास के कारण अनेक घरों में खीर बनाकर खुले आकाश के नीचे चंद्रकिरणों में रखने और अगले दिन उसे प्रसाद रूप में ग्रहण करने की परंपरा प्रचलित है। इस परंपरा में प्रकृति के प्रति कृतज्ञता, पारिवारिक सहभागिता और पवित्र भावना का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।

व्रत-पूजन: शरद पूर्णिमा पर श्रद्धालु अपनी पारिवारिक परंपरा और सामर्थ्य के अनुसार व्रत रखते हैं। प्रातः स्नान के उपरांत देवपूजन, इष्टदेव का स्मरण और दान-पुण्य किया जाता है। संध्याकाल में चंद्रदर्शन के पश्चात चंद्रदेव को अर्घ्य अर्पित करने की परंपरा भी अनेक स्थानों पर प्रचलित है। मंदिरों में विशेष भोग, दीपदान, हरिनाम संकीर्तन और धार्मिक प्रवचन आयोजित किए जाते हैं। कहीं श्रीकृष्ण को श्वेत वस्त्रों और पुष्पों से सजाया जाता है, तो कहीं रात्रि में भजन-मंडलियां भक्तिरस का संचार करती हैं। इन समस्त अनुष्ठानों का मूल उद्देश्य अंतःकरण की शुद्धि और ईश्वर के प्रति श्रद्धा का संवर्धन है। *